



I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मास ६४ अंक १२७)



ई अकमे अछि:-

## १. सप्ताहिय सदेश

### १. गद्य



१.१. रम आरुव वरी तगस ईमिठस धर केलो: बाजक्याव सा (रिनीत उपेत सग अतुरति)



१.२. जाति टेलीवी-एक श्रग: छैट रूढ -भाग-३



१.३. गावदानन्द दास परिमत- बज्रनन्दक आयेताग



१.४. सुमित आनन्द- बिगेष्ट



२.३. जगदानन्द झा मनु- दूठा बिलि कथा

३. पछ



३.१ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनित-गजत १-२



३.२ प्रदीप मुख- गजत



३.३ बिन्दुशेखर ठाकुर-हिसार खिलौक



३.४ बिमा कालु झा, लेलीक खदग



३.५ गवा मल्लिक-कलित/ लेलीक एक दूठा पाति/ गजत



ejournal विदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक ई पत्रिका विदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA



३.७.१.

जगदीश प्रसाद मण्डलक गीत २.



मनोज कुमार मण्डल- ४ पौष्ट करित



३.१.१.

बाबुदेव मण्डल- कविगव/ बज्जित एकमत २.



बाबुदेव मण्डल- सुवन केत आ भुवन पेट



३.१.

श्री कामत कथा/ आनन्द कानन



४. मिथिला कला-संगीत १.

जाति मा टोलवी २.



बाबुदेव मिसे (चित्रमय मिथिला) ३.



उपेक्ष मन्दन (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

—



३. गद्य-पद्य भावनामय-उपेक्षा/ धर्मवेद-  
उपेक्षा

रविशंकर लीलाधर "मेतल"- हिन्दीस मैथिली अनुवाद



विनीत



३. गद्य-पद्य भावनामय-उपेक्षा/ धर्मवेद-  
उपेक्षा

जगदीश प्रसाद मण्डल- वान उपेक्षा- ले पाठ-ए



बिदेह मैथिली गैथी डाउनलोड साइट



VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्ठा प्रवान अक ( ब्रेन, तिवृता आ देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीटाक तिकपव उपनछ अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link.

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्ठा प्रवान अक ब्रेन, तिवृता आ देवनागरी कपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ग्र-पत्रिकाक पहिन ३० अक

बिदेह ग्र-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अक



बिदेह आर.एस.एस.कीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ रतांगपव तगाडु ।



रतांग "लेआउट" पव "एड गाडजेट" मे "कीड" सेलेक्ट कए "कीड यू.आर.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठांगप केनासँ सेहो बिदेह कीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगत बीडवमे पठरा लेन <http://reader.google.com> पव जा क२ Add a Subscription बठेन क्लिक कक आ पानी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेन्स्ट कक आ Add बठेन दराडु ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन गौडकान्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ निधि पारि बहन छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mthilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीटाँक निक सभ पब जाऊ । सगहि बिदेहक सुभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-प्रबान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रंगममे अननागन देरनागरी ठाँगप कक, रंगमसँ कापी कक आ रडि डाक्यूमेण्टमे पेसष्ट कए रडि कागतकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।) (Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM)) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio / Video / Book / paintings / photo files. बिदेहक प्रबान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ गेथी/ चित्रकला/ फोटो सभक कागत सभ (उच्चारण, रड सुथ साब आ दृष्टिकृत मय सहित) डाउनलोड कबराक हेतु नीटाँक निक पब जाऊ ।

### VI DEHA ARCHI VE बिदेह आर्किव



जातिबन्धिव प्रूर मलकरि रियापति । भावत आ नेपालक माछिमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कालसँ महान प्रकम ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकम ओ महिना लोकनिक छि मिथिला बन मे देखू ।



गौरी-शेकरक पानरणि कालक मूर्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० रम प्रूरक) अलिनेथ अकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माछिमे पसबन एहि तबलक अछार प्राचीन आ नर स्थापन, छि, अलिनेथ आ मूर्तिकलाक हेतु देखू मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अल्लक्षण सगहि बिदेहक सर्च-गँजन आ न्यूज सर्चिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र सकलक लेन देखू बिदेह सूचना सर्च अल्लषा

बिदेह ज्ञानवृत्तक डिस्कसन फोरमपब जाऊ ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त) पब जाऊ ।



## सपादकीय

5

गुणात्मक पैशाटि भाषाक वृहत् कथाक केमेट्रिक कथा मजबूती वा सोमदेवक कथासबिसोवक अनुराद लेखक कथा कथा कहलक गेली सेहो भऽ सकैत छल जे अनुराद कथाक प्राबल्य त कहिते छल ।

अनुरादक गतिहास बहुत पुरान छै । कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अरेबिया, ग्रीक आ लैटिनक कोनो कानजयी कृति जखन दूकर हेरत नागत त ओगपव छल त भाषा निखराक खगतक अनुराद भेल आ कलेक आव आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुराद कऽ दुसरक खगतक अनुराद भेल । प्राचीन योर्प सायाजक सत्राष्ट अशोकक पाथपव कानित शिलालेख सभ, कच्छी निपि आ भाषामे, राजाक आदेशकेँ रितिन प्रातये प्रसारित केनक । भाषा पहिले मूल भाषामे निखन जागत छल आ बादमे दोसर भाषामे निखन जात नागत ।

मैथिलीसँ दोसर भाषा आ दोसर भाषासँ मैथिलीमे अनुराद जेन सिफ़ातु मैथिलीसँ सोम दोसर भाषामे अनुराद अखन धरि संस्कृत, बांग्ला, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी धरि सीमित छल । तल्लि ए पाँच भाषाक सोम अनुराद मैथिलीमे होगत छल । ए पाँच भाषाक अतिविज मराठी, मलयालम आदि भाषासँ सेहो सोम मैथिली अनुराद भेल छल जेना से नगणा छल । मैथिलीमे अनुराद आ मैथिलीसँ अरु भाषामे अनुराद ए पाँच भाषाकेँ मध्यस्थ भाषाक रूपमे नऽ कऽ होगत छल । अरु पाँच भाषामे हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजीक अतिविज आन दू भाषाक मध्यस्थ भाषाक रूपमे प्रयोग सीमित छल । अनुरादसँ कले भिन्न छल कपालुवण, जेना कथाक नाठ कपालुवण वा गद्यक पद्यमे पद्यक गद्यमे कपालुवण । ए मे मैथिलीसँ मैथिलीमे रिवाक कपालुवण होगत छल आ अनुराद सिफ़ातु जेन ले बहल कपालुवणक अर्थ आ भारक अनर्थ कऽ दैत छल । मैथिलीमे आ मैथिलीसँ अनुरादमे त जे समझा आव रिक्छ छल ।

उत्तम अनुराद जेन किछु आरथक तऽद्वः शिष्टः अनुराद कवरा कान धान बांधू जे कहरी आ सन्दर्भक मूल भार आरि बहन छल अछि अछि ले । शू, राक्य आ भाषाक गठन अक्षर बहल से धानमे बांधू । मूल भाषाक शिष्ट, सभ जे प्राचीन छल त अनुराद भाषाक शिष्ट, सभकेँ सेहो पुरान आ बाँधी बांधू । मूल आ अनुराद भाषाक राक्यवण आ शिष्ट, भन्दावक वृहत् जेन एतए आरथक भऽ जागत छल । मूल भाषामे जेन कोटिया कऽ राजन बाधनाथ, उमेरीक प्रति सगुनकेँ बाधनाथ, उमेरीक रदनाथ बाधनाथ, उमेरीक कऽ अनुराद कएन जेन उचित छल जेना सामाज्य परिवर्तितमे से उचित ले छल । से शिष्ट, भार, प्राकपमे सेहो आ मूल प्रतिक देश-कानक भाषामे सेहो समानता छली । अनुरादकेँ मूल आ अनुराद कएन जेन भाषाक जेन त हेराके छली सगमे दू भाषा केव गतिहास, भूगोल, लोककथा, कहरी आ ग्राम-रथ आ नष्टक संस्कृतिक जेन सेहो हेराक छली । जे मध्यस्थ भाषासँ अनुराद कवरा कान आव ऐसी महत्पूर्ण भऽ जागत छल । ए परिवर्तितमे “दू भाषा केव गतिहास, भूगोल, लोककथा, कहरी आ ग्राम-रथ आ नष्टक संस्कृतिक जेन” सँ तापेय अनुराद आ मूल भाषा केव छल छल मध्यस्थ भाषा केव छल ले । कखनो कान मूल भाषाक कोनो भाषासँ सगुनक तऽद्वः रा गएव भाषिक तद्व (सांस्कृतिक तऽद्वः) क सगी-सगी उदाहरण अनुराद भाषामे ले भेटैत छल आ तखन अनुरादक गपकेँ नमवारऽ नष्ट छल वा ओग जेन एकठा सन्निकट शिष्टरती (ओग ले भेटैत तऽद्वः) देम नष्ट छल । ए परिवर्तितमे सन्निकट शिष्टरती देरासँ नक गपकेँ नमवा कऽ दुसर रा परिवर्तित, दऽ ओकरा स्रष्ट, कवर छल । ए सँ मूल भाषासँ मध्यस्थ भाषाक माध्यमसँ कएन अनुरादमे होगरना साहित्यिक याँकेँ नून कएन जा सकत ।

कथा, करिता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, कृत-कालजक पुस्तक, सगुनक रिज्ञान, समाजशास्त्र, समाज रिज्ञान आ प्रकृति रिज्ञानक गौरीक अनुराद कवरा कान किछु विशेष तकनीक आरथकता पडत । निबन्ध, कृत-कालजक पुस्तक, सगुनक रिज्ञान, समाजशास्त्र, समाज रिज्ञान आ प्रकृति रिज्ञानक अनुराद ए अर्थे सवन छल जे ए सभमे रिज्ञानसँ रिषयक चर्चा होगत छल आ सर्जनामेक साहित्य {कथा, करिता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध)} क रिषरत भार आ संस्कृतिक गुणाक ले बहत छल रा कम बहत छल । सगे एतए पाँच सेहो



कक्षा/ रिमयकक अन्वय सजाएन बहैत छथि । केमिकन नाम, बायोलोजिकल आ लैटिनिकन रागनरी नाम आ अन्वय सब सिद्धन आदि जे रिमिष्ट अन्वयिष्टीय सन्ध्या सब द्वारा स्वीकृत अछि तकर परिवर्तन रा अन्वय अन्वयित ले अछि । सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, लेख करिना अछि आ तखन कथा, जे अन्वयदत्तक दृष्टिकोणसँ देखी तखन । नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ पराक्ष निहितार्थकें टिहित कए पढत संगहि पात सभक मनोरञ्जन बृम्भ पढत । करिनामे करिनाक रिवास ओकर गठनसँ अन्वयदत्तक परिचित भेनाग आरथक, जेना हागकू मैथिलीसँ अंग्रेजी अन्वयदत्त करि लेबमे मैथिलीक राकि ३/१/३ क मेन जे अंग्रेजीक अन्वयदत्तसँ करि ले तँ अन्वय अन्वयित हागकू हागकू भे जेना तखन अंग्रेजीमे ३/१/३ सिद्धनक हागकू हागकू छै आ मैथिलीमे जेना रर्ष आ सिद्धनक समानता हागकू छै से अंग्रेजीमे ले हागकू छै । ई सन्दर्भमे जाति स्वीत टोषवीक मैथिलीसँ अंग्रेजी अन्वयदत्त एकठा प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि । करिनाक नय, रिमिष्टक रिचाव कए पढत संगहि करिना अन्वयदत्त करिनाक अन्वय शिर्षकसँ मिनन कए पढत । कथामे कथाकारक आ कथाक पात्रक संग कथाक एय, ऐकिकक समय-कालक ज्ञान आ रातरवर्षक ज्ञान आरथक भे जेना अछि । अन्वय महाकारक अन्वयदत्त देखू, बायोलोजिकल शिर्षक मैथिली बायोलोजिकल मानस अन्वयसँ मैथिलीमे अन्वयदत्त अछि अन्वय दोहा, टोपाग, सोवठा सब शास्त्रीय कर्षे अन्वयदत्त भेन अछि ।

संस्कृत भाषाक अन्वयदत्त माध्यमसँ पाठन आग शिषक लोकनि द्वारा प्राबल्य भेन । ई रिमिष्ट ले लैटिनिक आ नहिमे ग्रीकक अन्वयदत्त कवाउन गेन छन । ई रिमिष्ट जे अन्वय संस्कृत रा कोनो भाषा सीखर तँ आचार्य आ कोरिद क२ जेना अन्वयदत्त सन्ध्यासँ ले कएन छैत । जे कोनो भाषाकें अन्वय मातृभाषा कर्षे सीखर तखन सन्ध्यासँ क२ सकर, संस्कृति आदि पविचय पाठ्यक्रममे शिद्धकोष; आ लोककथा आ गतिहास/ भूगोलक समालेख क२ कएन जा सकैत अछि ।

संगक द्वारा अन्वयदत्त सर्जनात्मक रा निरन्तर, नूतन-कालजक पुस्तक, संगक रिद्धन, समाजशास्त्र, समाज रिद्धन आ प्रगति रिद्धनक अन्वयदत्त संगक द्वारा प्रायोगिक कसमे कएन जागत अछि अन्वयदत्त “कोनड रनडेड एनीमल” क अन्वयदत्त हागकू कर्षे “नृषि जीव” कएन जागत अछि । अन्वयदत्त संगकक द्वारा अन्वयदत्त किछु क्षेत्रमे सकन कर्षे भेन अछि, जेना रिक्कीपिडियामे ३०० शिद्धन एकठा “रेसी प्रहाङ्ग शिद्धनरी” आ २०० शिद्धन “शिद्धनरी”क अन्वयदत्त केनासँ, गृगतक ट्रांसलेशन अन्वयदत्त आदिमे अन्वयदत्त शिद्धन अन्वयदत्त केनासँ आ अन्वय गरेमक जेना मोजिता कायबल्लभ आदिमे अंग्रेजीक सभ पारिभाषिक संगकरीय शिद्धन अन्वयदत्त केनासँ ट्रिस्टिरीन स्रत: मैथिली अन्वयदत्त भे जेना अछि ।



गजेन्द्र ठाकुर

[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)

अन्वय स्रत: [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) सब पठाउ ।

१. गद्य



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA



१.१. रम आरुव वरी तगस ईमिस्टस खर केलो: बाजक्याव सा (रिनीत उपेन सग अलुवति)



१.२. जाति टेलीवी-एक ग्रग: टैट रड -भाग-३



१.३. गावदानन्द दास परिमत- बज्जनन्दक आयेलाग



१.४. सुमित आनन्द- बिगेष्ट



१.५. जगदानन्द सा यन्त्र- दृष्टी रिहनि कथा





हम आरुव बही तगसँ प्रिन्टिस धूर केलौं। बाजक्याब सा (रिनीत उपेत संग  
अनुवर्ति)

गतिहासक पन्नामे सब कताकावकेँ ठाम ले भेटैत अछि। एत कताकावकेँ आग धरि याद बाखन गेल अछि जकरा सदा प्रिय दले अछि। एत मिथिलाक कतेक ओल कताकावकेँ जालेत छी जे किना किनको प्रिय पढे अपन सानाकेँ जूरित बाखयमे सकय भेल अछि या ओ गतिहासक पन्नामे दर्ज अछि। छते दवभगा बाज हूँ या रनेनी नुठे या मोनरवा बाज, बाजदवरावी कताकावक गतिहास दर्ज अछि। ए दवरावी कताकावसँ कवाक कताकाव केँ न२ क२ ले त अपन समाज जागक अछि आ नहिये गतिहास लिखएना। स्रतवता प्राणिक रादसँ एत कताकाव प्रतिष्ठित भेल अछि जे सदा प्रतिष्ठानसँ जुड़न बलन। हुनके मायता भेटेल जिनक गीत दवभगा आकाशिरासीसँ प्रसारित भेल। ददा ए गपसँ जनकाव ले कएन जा सकैत अछि जे आग धरि दद्वी भवि लोकक रपौती आकाशिराणी दवभगाक संगीत विभागमे छपल अछि। जखनकि सपूर्ण मिथिलामे अनेको एल कताकाव अछि जिनका तग संगीत सानाक ले त सद्गति सान अछि आ नहिये लुकव कोलो निधित गतिहास भारी पौढीकेँ भेटैत। एक दिस लेडियोसँ मैथिली गीत सुनए रना लोक ले भेटैत अछि, ओत सचाङ्ग अछि जे दद्वीसँ राहव अ कताकाव जेथे गाय-घबक मदानपव अपन कताकेँ प्रदर्शित करैत अछि त दर्शक थपड़क आराजक दम लेडियो स्टेशनसँ भेटएरना छवि-पाँच सँ ठेकाक दायसँ रसी तकत बाथैत अछि। एहले एकठा कताकाव अछि बाजक्याब सा। प्रकृतिक कविता सँ तगरान हुनका आँख ले दैतक ददा हुन एल गनामे सुब आ आँखमे थिक्न एल दैतक जे जेथे ओ संगीत साना करैत अछि त एहन नागत जे सबसँती मोसे आरि क२ हुनका पव सराव अछि। संगीतक एकठा तपस्वी बाजक्याब सासँ रविप्र पत्रकाव रिनीत उपेतक गपनिप-

**रिनीत उपेत:** अलौक संगीत शिक्षा कोना भेल ?

**बाजक्याब सा:** हम गामे मे बहैत बही। लेलेसँ हमरा नखत ले दैत अछि, ददा छीसँ हम लोककेँ कनी चीह जागत छी। स्पष्ट किछ नहिये बुझल। गाय-घबमे संगीत माले भजन-कीर्तनक, नाटक सबक माहौल छन ते हमसँ गारु-रजारमे नागि गेलौं। हमर पढ़ा ग सौतह रवक उग्रमे थुक भेल। हमर गायक भाय नारायण साक ओ ग रवथ माय मबन बहिन। ओ ग लोहमे रड़ बास लोक सब आन छन। ओ गये नारायण भायक माध्यमसँ हम दवभगा गेलौं। दवभगाक लेखन क्रिानय (लौ कामेश्वरी प्रिया शुक्ल होय) मले बाजकीय लेखन उच रिानय, दवभगामे ठेसु भेल। संगीतक जाँच भेल आ केलौं। ओत पाँच रवथ बहलौं। पढ़ा ग केलौं। संगीत, अण्णजी ओत पढ़ाँत बही। रञ्ज एक सँ रञ्ज तीन, लेव सीपे पाँच आ तीन रवथमे सतमा पास केलौं। मात्र छह रवथमे। 1988 मे मैट्रिक पास केलौं।

**रिनीत उपेत:** लेव दवभगासँ गताहराद कोना गेलौं ?



**बाजक्याब सा:** सगीतसँ मैट्रिक केनाक बाद अनाहाराद आरि गेलौ। प्रयाग सगीत समिति, अनाहारादसँ एम.ए. केलौ।

**बिनीत उपेत:** दबडगा आ अनाहारादमे अहाँक सगीत श्रुक के सभ छन ?

**बाजक्याब सा:** दबडगामे गौतम मिश्र, सुरेन्द्र सा सँ सगीत सीथे छलौ। कुनमे तबनाक मास्ट्रिब कियो ले छन। हावमोनियम तँ हम अप्पन रावूजी भुरलेशिव सा सँ सिखलौ। अनाहारादमे छद्मभूषण पाडेय छन जे हमरा सगीतक पाठ पढ़एतक। हम गायन गौतम मिश्रसँ सिखलौ। टूटि हम अहब छी तगसँ हम थारी कतरे ले केलौ, प्रेक्ठिकन रड केलौ।

**बिनीत उपेत:** अहाँके अप्पन कोनो सगी-साथीक खान अछि ?

**बाजक्याब सा:** हमरा सगे बाय सागर पासवान, मोहन बारत रावीक, भगत सा, गंगा प्रसाद मेहता, बायरताब मडन दबडगामे पठे छन। अनाहारादमे भवत पाडेय, मखननान, अर्जुन पाडेय छन, झुदा सभ कियो कतए अछि, ले मानूय।

**बिनीत उपेत:** अहाँ केन सभ रज रजा सकैत छी ?

**बाजक्याब सा:** हावमोनियम, ठोनक, नान, राप्पुरी, कैसियो, गिठाव, तनपुरा सभ किछ रजालेक जेन जालैत छि। हावमोनियम रजएर तँ हम गाममे सिखलौ।

**बिनीत उपेत:** अहाँके सगीतक कोन बाग रेसी पसीन अछि ?

**बाजक्याब सा:** देखियो, जे सगीतक आवाधक अछि, हुनका कोन बाग रेसी पसीन लएत या ले लएत, अ गप तेराक ले चली। किछि बाग एक तबहे तबकारीक मसाना छि। जालि नीक तबकारी रजालेक जेन सभ मसाना चली, तालि कोनो सगीत आवाधकके सभ बागक जानकारी तेराक चली। झुदा यमन, बाग भैवर, खराज, बाग देशे, बाग भोषानी, बाग विरग, बाग काली रड पसीन अछि। यमनक उपेति कनाए ठाँ सँ भेत अछि। कोन ये कठ नय अछि, अ जानर आरथक अछि।

**बिनीत उपेत:** अहाँके कोन शास्त्रीय गायकक गायर पसीन अछि ?

**बाजक्याब सा:** हमरा रैजू रावराक तान, भीमसेन जेशिक गायर रड पसीन अछि।

**बिनीत उपेत:** सगीतक प्राणायम कए जेन या सुनए जेन जागत छी ?

**बाजक्याब सा:** जखन दबडगामे पढ़ैत छलौ तँ दबडगा ठाँ जेनमे या लेब नहरियासरायमे प्राणायम सुनराक जेन जागत बली। जहियासँ गाममे बरह नगलौ तँ अप्पन पचायतमे भजन-कीर्तन गारि जेन जागत छी। ओना रनमनखरी, रठैनी, मोहव, दिग्गी (कठिहाव), थावा, सिगावपुर, आनमनगव, बुआरीमे कतेक रवथ गारि जेन जागत छी, जखन कियो रजालैत अछि।

**बिनीत उपेत:** कोनो लोकरी जेन गेलौ कि ले ?

**बाजक्याब सा:** कसुबरा सगीत विद्यालय, नागपुर गेलौ तँ ओतए ओबिजनन मांगय नागत। कहनक जे डुप्लिकेट सँ काज ले छनत। हमरा पास डुप्लिकेट प्रमाणपत्र अछि कारण छन जे हम एम.ए. कबहि क२ बाद एक रेव लेब अनाहाराद गेन बली। ओतएसँ गाम घुबि बहन छलौ तँ अनाहारादमे हमर ट्रेन बातिक दू रजे छन। हम अनाहाराद स्टेशनपर आरि क२ ओतए सुति गेलौ। दू रजे बातिमे ट्रेन आएत तँ एतेक धक्क भेत जे हमर



सठिक्किष्टे सभ्ठा कियो ढोवा जनक । एकव अतारा, नागशुक्ल भावा दोसब छन, जकवा हम ले रूमि सकैत छलौ तगस गाय आरि गेलौ ।

**बिनीत उपेन:** अहाँकेँ संगीत सामनामे केन तबलक दिकत आरित अछि ?

**बाजक्याब सा:** देखियौ, हम रेली भजन गारैत छी । ए साज-राज रजायर सामूहिक काज अछि, कियो असगल ए काज ले क२ सकैत अछि । छुकि हम आरुव छी तै हमवा लोक सभ ठकि लेत अछि । तगस लोकशर रिश्यास कवर कर्तिन भ२ जागत अछि । दोसब गप ए जे हमव कियो सहयोगी ले अछि । जौ केकरवा बाथे छिई त खचवपनी कव२ नागैत अछि । एनाउस किछु सुले छिई आ दै किछु आव छै । राते कवनकेँ एतय ठा ये, आ दै छै किछु अउव । कतेक पैसा देर, ए कहि क२ कियो ले न२ जागत अछि ।

**बिनीत उपेन:** गारैक जन सभस रेली पाग कतए भेटैन ?

**बाजक्याब सा:** एक रेल रठैनी ये दू बाति बहलौ आ 2200 रुपया देतक तँ खुशी भैन जे हमदू किछु क२ सकैत छी ।

**बिनीत उपेन:** एखन अहाँ केन काज करैत छी ?

**बाजक्याब सा:** भैस चारैत छी ।

**बिनीत उपेन:** गायमे संगीतक जन कोना समूह बनत कि ले ?

**बाजक्याब सा:**—ठकन भाय, बतन भाय, गजो भाय, ठाकुर, रीजो से समूह बनत आवत भैन आ बनत बहन । हमवास पहिले भुरलेश्वर सा, हविरल्लभ सा, उमाकात सा, बाधकात सा, नख्खे काका बह२ । उग समयमे खुर चले बह । दूदा बादमे लोक सभकेँ घमड भ२ गेलै । किछु गोष्टे गायस बिबाव भ२ गेल, लोक कयारै नागत आ रातव चलि गेल ।

**बिनीत उपेन:** कोना बिस्सा अहाँकेँ याद अछि, जखैन अहाँक योग्यताक मथौन उड एत गेल ?

**बाजक्याब सा:** एक रेल ग्लानपाड १ गेलिई, बाजपूतक प्राणाम छन । सजोगस लवमोनियम रजारेरना कनाकाव ले आएन । लोक सभ कहतक जे बाजक्याब जी लवमोनियम नीक रजारे छथि । एपव हमवा कार्यक्रमक जन तैयार कएत गेल । दूदा आव सभ कनाकाव राजन, ए तँ सूवदास छी, की रजाउत । सभस सीनियर जे छन उ प्रहृनक, —की रजारे छी, की गारै छी । हम राजलौ, —खोड रहत रजारे छी । —लवमोनियम रजारे छी ? की रूमन अछि ? खोड १—मोव रूमन अछि ले ? हम कहलौ— जे लवमोनियम रजारे छथि लूकास कनी रेली रजारे छी । जे रेली रजारे छथि लूकास खोड कय रजारे छी ।

**बिनीत उपेन:** कोना नशा करै छी कि ले ?

**बाजक्याब सा:** नशा केनाक बाद किछु ले भ२ सकैत अछि । नशा कवर ग्लान अछि । दूदा जखैन हम पठ १ग— निखाग छोडनाक बाद तय्याक आए नगलौ, भैसरव तँ हम बहर कवी, सुमन, रीजो, हम सभ कियो भैसरव बलिई, रीजोक हास छुनेछी न२ जेलौ, तग दिनस आगत छी ।

**बिनीत उपेन:** अहाँ रियाह किए ले केलौ ?

**बाजक्याब सा:** कियो पिता नडकी दैक जन तैयार ले भैन, तगस हमर राह ले भैन ।

**बिनीत उपेन:** तखैन मनपर कट्टान कोना केलौ ?



**बाजक्याब सा:** एखन हमर उमर 47 बरख भऽ बहल अछि । एकठा गप जामि निसौ जे ग मन के जतए दोड़ यर ओतए जएत । मनके कष्टान कबहि सँ ओकर कएद होगत अछि ।

**बिनीत उपेत:** एखन अहाँ किछु सुना सकैत छी ?

**बाजक्याब सा:** जर गारैत छी तँ सबठा बाग आगू आरि जागत अछि । ओना एकठा यमन बाग देखू,

नीधगामाशालेसा

चले आना, मनथाम चले आना,

रस तू ही त्रे मेले जीरन का आधार रने बहना

मेले थाम चले आना ।

-जखन सुब मे बहैत छिँ तँ सब याद बहै छै । बाग ठोब पब आरि जाग छै । ओना नै क्वाग छै ।

**बिनीत उपेत:** अहाँ कोन तबलक गीत गारै छिँ ?

**बाजक्याब सा:** जेलन समय तेलन गीत गारै छिँ । रसत भुक्त होरीक गीत गारै छी ।

अले मोले भिनसवरा,

कोयन कूकय छै,

आमक मजब पब मजब गूजय छै,

जिनकब आदमी घबक म्देब पब,

रैसन-रैसन काग कूकय छै ।

ग गीत रड़गार (छंद सा क माहक) क छंद क र्नायन छै । हम सुनले गारैत छी ।

**बिनीत उपेत:** अहाँ अपन गीत र्नारैत छिँ ?

**बाजक्याब सा:** हम गीत नै रनरैत छी । साज-राज ठोब पब आरैत छै ।

ई कनास अपन मतब [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाउ ।



ज्याति टोमरी



## एक हागः टैट बूडः भाग २

लोकन रिडियो कनरक मेयुव रनन दुल्लो से जे सभस नर किन्धक सी. डी. ओकरा नग बहत दुल्ले से द२ जागत छन । परिवारस रात केनाग तै ठैनिक छन हमरा जेन नर शिहवमे । आ देव तक किन्ध देखेक परिवामयुकरप बरिदिन । सुतनाग ॥ सुतनाग ॥ । आ सुतनाग । । । ।

हनाकि अ मात्र किछु समयक आवाय छन । विरालक पहिन सान रीत गेन द्रुग-ठाँठा- भिनागक यातायातमे । हम कनो पारनि ले छोडले बली से खूनी अछि हमरा, टैट बूड । एमे हमर यौमजिक बहत क्षपा बनि ।

हमर विराल एक सान पहिले तय भ२ गेन छन । हमरा योन अछि जे हम कतेक उमेक बली विरालक पहिले अपन पतिस रात कवरक जेन । कमस कम हमर लेहवमे तै यह छन बह जे नडका-नडकाक रात रिछाव मितराक छली । विरालक पहिले पछन कनराक छली । हम बाखीमे अपन भैया भैया नग भिनाग गेलो । ओत समस्त सायुव भेटे कएन अएन द्रुद पतिदेर गायर छनयि, काका उष्टीक अहार छनयि । हमर भैयुव सेहो अकिंसस सीपे एना द्रुद रहु देवस एना, काका लुका बस्ता रिसवा गेनयि । सभ लुकाव खूब मजक उडनेकनि । रापस आरि क२ हम बहत दुःखी बह नगेलो । तखन हमर मा' कहनयि जे अ तै ले हेते । हमर रैठी पछन-निखन अछि, ओकर विरालमे जे सभ पुरान तबीका छलहिन से कोना हेते । तखन ओतएस ननदिके सनाद अएन जे लुका हम सभ रात कहनयि आ ओ हमर पतिके कहनयि । हमरा सेहो मजूर ले छन । लेब हमरा लेनपव रात कवरक अरसव भेटेन । भातक मितमिना किछु रैसिये थुक छन । द्रुद एक दिन हम लेन केनयि तै कियो आन लेन उठेनक आ रडी भविमगव आराजमे पुछनक 'आराज ले नीक नागत की ? अ आराज हम कखनो ले रिसवर । बादमे जखन कखनो अ आराज हमर जिन्दगीमे दूहायन, हम रठियास टिहनि द्रुद पति देर कखनो ले कहना जे अ यह राजि अछि । द्रुद हम हमेशा यह देखनि जे अ राजि हमर विरालक जीरनमे बहत दखन द२ बहन छन । अ एतेन राजि छन जकरा दोसराक निजी जिन्दगीके अपन ठगस टालेक बहत उमेकता छल । हमर दृष्टिस एतेन रिछाव कखनो दोस्तीक प्राकप ले भ२ सकैत छै द्रुद अपन पतिके कखनो हम ए जेन बाजी ले क२ सकनयि ।

है तै हम गाय गेलो आ ओत दुर्गापूजा देखलो । रावृजी अष्टमी दिन सिंहासु कलेनाह । रापस आरि क२ हमरा जयदिनमे एक उपहार भेटेन । हमर भारी पति हमरास भेटे कएन जयशेदपुर एना । हमरा बहत खूनी भेन ए रातक, द्रुद बादमे हम अपन मा' रहनिके कहनयि जे हमरा तै चेहरा मोले ले बहत, कतेक कम कान जेन भेटे भेन । दू बहत थिसियेनी तखन भैया एकठा कोठे देनी जे निख, अकरा देखेन बह । लेब समय रिठेन गेन । दिरानी मनल्लो । दिरानियेमे हमरा अपन कार्यमे पहिन दवमाला भेटेन छन । हम अपन विरालमे अपन मा' रावृजीके अपन पसन्दक कपड १ खरीद क२ देनयि । काज केनाग अतेक पसन्द छन जे अकिंसमे अपन रासके ले कहनयि जे हमर रिआह ठीक भ२ गेन अछि । कनो हसी मजक अकिंसमे ले करे दुल्लो । बादमे रासके जखन पता छनयि तै ओ रजा क२ पुछना जे की की तैयारी क२ बहन छी रिआलक । हम अकछा गेलो । हम कहनयि जे हम साडी किनलो अपन पसन्दस । लेब ओ पुछना जे रूठी पारिवर ले मेहवरान भेन छी अखन तक । हम हँस नगेलो । लेब सब केरिस राहव एना आ सभके कहनयि जे लुकाव पनी रूठी पारिव गेन छनयि । ओ जखन पनीके घब आन२ गेना तै लुका पारिवक अन्दर रैस२ पडनयि । अन्दर तीन ठी सती लेस पैक नगेन बह । लुका रूमेले ले केनयि जे के लुकाव पनी छनयि । ओना ओ सब हमर रिआहमे सभस अमूल उपहार काजक अविभरक प्रमाणपत्र देना जे अखन तक हमर सजीरनी अछि ।

अ कनरक अपन यतब ggaj endra@videha.com पव पछि ।



नारदानन्द दास परमन



## बाजनन्दन आयोनाप

एहि आयोनाप मे प्रथम प्रकय अपन दीर्घकालक यात्राक अनुभव के अपना झूठे राज कए बहन अछि जे सानूतृत तथक रिश्तसमीयता के गंभीरता सँ प्रभावोपादक बनैछ ।  
एकरा निश्चरक पाछाँ हमर उद्धृत कोनो राज रिशेयक प्रसंगा नहि, झूठातः नरका पीठीनर लोक (के एहि राक्षसिकताक प्रति सजग आ सचेष्ट कबर अछि जे कोनो मलन उपनद्रिक हेतु ककरो कोन तबहे दीर्घकालिक तपस्या कए पड़ैत छैक । जेना अदनासन देवागत छद्म चूरी)पिपितिका (सेनो डेगा-डेगी चनि पलाड़ के ठपि जागछ । तहि एहमे हमरा रमागछ जे कर्णगोष्ठीक संग कर्णमृतके यात्रा सभ तबहे सधन-सम्पन्न नहि बहिरहँ ग रगत रतीस रर्य सँ चनि आरि बहन निवन्त तपस्याक प्रतिकूलन थिक जे "मिथिला-मैथिलीक विकास मे कर्णगोष्ठी एर कर्णामृतक योगदान" १९७५-२०११ "(सकलक कप मे हमबालोकनिक सोना" प्रस्तुत अछि ।

एहि प्रसंग मे कर्णगोष्ठी झुगल आर्थिक सहयोगक अरदान कए यत्नक प्रेरणाक भाति प्रकाश भागी छथि । एकरा जे समसामयिक लोकक)वास क नरका पीठीक (मानसिकता कनिष क क रत हमोधि जेराक अछि)जेना उगत चन कि नपकृ पृथा(ताहि प्रवृत्तिक सदर्थ मे कर्णामृतक सधना एर उपनद्रि द्रष्टरा अछि । बाज नन्दन रावृक निष्ठा जे एहि राजे सुराज गेगछ ,रोहि मे कोनो तबलक आशेयाया नहि भ क मात्र रतुनिष्ठ निवपेक प्रदर्शन अछि जे आयोनापक वचयिता द्वारा कएन गेल अछि । रो एहि बीति" मिथिला मैथिलक प्रतद्रता रिज्ञापित कए बहनाह अछि,सगहि नरका पीठी के ओकर कर्तरक दायिग्रोध करेराक उपादान सेनो उपस्थित कएननि अछि ।

एहि आयोनाप मे एक राज नहि सस्या राजि बहन अछि जाहि सँ मिथिलालोकक आशि, अतिनाया आ आकाफा सनन अछि ,से रात रमराक घाली । सालि मे सक अतिराजना एहना गेगछ,पाठक के अपन मानस क्चितिज उदाव रनाक वखराक घाली, सह हमर अग्रथिना ।

### आयोनाप - बाज नन्दनक

हमरा नहि किछु छह, मैथिलीक परिप्लारन नह हमजीरग छी ।  
सुधी पाठकक जेल पत्रिका कर्णामृत के नित डेरग छी ।  
तीन दशक कए पाव रयक्रम रूझ अपन गेगतह सेरग छी ।  
यदीप छेष्ट डेगी के जननि मे बहि जनगोत जकाँ खेरग छी ।

नितह प्राचा क्चितिज सँ दिनकवक अतिरादन अकशिमा परग छी ।  
दिग-देशानुव पाव सँ अनितक अमन सुखद समाद जे नग छी ।  
रह्ना मेघाछन दिगन्तक बहनह नभ निर्मेघ परग छी ।  
परगत पाप्मि स्पर्श पयोदक सकेतन ,अतिवाम बहग छी ।

नाभ ग नाम "बाजनन्दन" भएल अछि एतरा जे हम ले थकग छी ।  
आधि-राधि राधा के पाव नहि जिजीरिमा पव पाव दग छी ।  
ओतरे नहि हम राखनह सँ अतिनन्दित भए बाज कवग छी ।  
"मैथिलीक"आशीन अपविमित मैथिलीक सेरा सँ परग छी ।

"कर्णामृतक "अमिय सगेवित सेरा सँ जे अमृत परग छी ।  
रुन मात्र सँ परिप्लारित भए हम अजस्र सुखसिन् नहग छी ।  
"कर्मण्यारधिकारस्तु "केव मिहिव -रले घन तिमिव कष्टग छी ।  
की आश्चर्य यदि भवि उड न हम सात सद्गता पावक नग छी ।

मैथिली-साहित्यक मज्जा मे स्वर्णिम संस्कृतिक धरोहर,  
बाखन बहए तेना जे भरिमा पाव सगति गगतक सुखक ।  
दिग-दिगन्त के कवति प्रहसित सुव-सवगम सगीतक बबहव,  
शिरक नचाकि-मलेरीयागी सँ गृजित जनकसुता केव लेहव ।

गोवर सँ उच्छसित बसावे सौवभ सुवनक सुखद पसाव ,  
मार्तन्डक-झाता प्रच्छ सँ मैथिलीक लियरी न लव ।  
आस्था तुग हिमाद्रि-शृंग सन राय मध्य कीर्ति-प्रज धाव,





जकर भुरन मे आहोदित अथ भुन आवती उताव ।

“कण्ठित” सार्थक पयुन जे अजनि भवि-भवि जन तक आनए ,  
गविमा सग माधुर्य तिवहृतक रन्दनराव कितिज तक तानए ।  
सभर ते प्रवि सग निसर्गो सुखद सयोग अहर्तक ठानए ,  
रतिस अथक भेन प्रकशिन तेत प्राप्त अनुदान प्रमाण ।

लेसन गेन “लीखक” कव सौ” कण्ठितक “जे ठिय-ठिय राती ,  
बहनहू से उमकारति ठेयी अविता स, सेरति दिन-राती ।  
निबरन-कान निपुन पृथ्वी केव छरगतकितिज बहत अ पाती,  
की न एहन सुनि-सकल स लेत तपु मात केव छाती ?

की न मैथिलीक सतनहू के पथ प्रशस्त लेत लेखा स ?  
कान-भान पव कण्ठित स ठपकन मित रू-लेखा स,  
दूव अतीतक आँजव स उठि अरगत सवगम अनदेखा स,  
सहज सवन समृद्धि सुगोमित प्रका केव उमक पेखा स ।

होगत बहन गजवित” सद्गुण “मजून सन अनरवत कान मे,  
मधुव सावगाभित प्रसन्नन उमा भवगत स्रत प्राण मे ।  
लौ सदीक रिझार पाव कवि छनि अरगत उर्जा अज्ञान मे,  
कण्ठितक सन सुव-सवगम उर्मि अष्टि एखनहू उड न मे ।

अमनित मित-रवित सुनि-सुवभित भूमि अ यारतकान बहए,  
सकृतिक सुकृमाव अकणिमा-दीपु मैथिलीक भान बहए ।  
तारत कण्ठिते पसारति अरिवत प्रीतिक ज्ञान बहए,  
कण्ठितक हिडोन मे सुनगत रूह, रनिता आरान बहए ।

छाह लयव मैथिली-मानसक कण्ठित अ मवान बहए ,  
तान दैत सतवण मे जकरा दतु टित दितु ओ कान बहए,  
अमित उड न भलेत कम्पना जाहि छरित प्रतिपान बहए,  
होगत नित मैथिली-मनीषा जग स सदति लेहन बहए ।

उपेक्षति कोअपि समान्तर्या “भरभुतिक धाव पकड़ने,  
हम ले बहर त हमर तपस्या मैथिली पावारार पकड़ने,  
दिरा-वाति केव दोवा-बुकी रिट प्रहृषक सकार पकड़ने ,  
रहत घाव मे काननिर्विक कररो गुंभ अरताव पकड़ने ।

नदी सदनीषा रसुकरा सविताजन पठैरैछ सान भवि ,  
पथ होगछ आदित वणि-अभिमेकित भोले जकर भान कवि,  
जतए उतवि नीवर-निबद्ध नभमे शिवदक हो अथ रिभारवि,  
बजनीगधा केव रितान मे थकए न मनयानिरो तान भवि ।

नहि रिदेह नहि सीवद्वज लय तदपि उर्वा शिङ्ग उभावन,  
नहि नृप तगयो मिथिलायाष्टिक प्रतिभा के दए तक उतावन ,  
प्रति के भोला तान दास केव दीपदान दए सुनि सकारन,  
माह-पिह वृा भूमिक प्रति लय निज प्रति स एहि भाति उतावन ।

प्रतिभापूज मैथिली पुनक सृति मे जे अक निकानन,  
अर्थदान आलोकसुद्धित अमवदक सडा सन गाड़न,  
सावस्रत सुभ मैथिलीक रामक बाखत छरि अजरावन,



बहत जाहि सँ लोक छेतना स्पर्शित भए सदति पखावन ।

दीपशिखा केव बिजु कपन सँ अष्टहास कवि हँसत अम्बवता,  
सतत सब्रतिप्रवक्त कव सँ उद्गठित प्रातिभ उर्ववता,  
अर्गीभूत कवत दर्शितोत झुर्झ गतिहास अपन तपेवता,  
हवति चतत जे दीर्घकाल तक सकन समाजक लौकिक जड़ता ।

पालन, गोमण्णा विकास ये जतरा किछु पारोत समाज सँ,  
तकरव कवति प्रतिपूर्ति किटिने द क जाग सुथ अपन काज सँ,  
सैह येन गेगत अथन अछि सेरा ये बहि नन्दन बाज सँ,  
कर्णमृत के जन जूठारति संगीतक हित साज-राज सँ ।

आसक, अभिनामक, उन्नासक रनि पतंग नभ ये कर्णमृत,  
दैत बहन आश्रय उमेद के कते भरिछु लेखकक, उर्झा नित,  
प्रासोहन सँ नर प्रतिभा केव सुष्ठु रिकासो कएन सुनिश्चित,  
कर्मिष्ठ अरिवत सेरा सँ अछि गौरवसम्पद यशिक सुश्रुति ।

नहि छिठेली छैकन परित सन, हमर भूमिका मैथिलीक प्रति,  
हम गेगत अभिसार तके छी गगनक पाव गगन तक उन्नति,  
मैथिली संस्कृति-साहित्यक समान कवए उर्ध्व रिश्रिक सम्यति,  
सकन अपन सधना तखन हम बूमि सकर जे पठनक सद गति ।

नगर-नगर हम छानति किवनहँ जेने कव ये लोठ-डोरी,  
डगर-डगर पानिक तनाहि ये कनरा नठकन लोमले मोरी,  
जते भए सकए लोकक मन सँ भारक सरेदना निछोड़ि,  
किय न छेतना जगरग प्रातिव भारक जन ये मधुस घोरी ?

छनति राठ एकसरो हमेशा हमर एएह पाखेय बहन अछि,  
माह-मदिबक आबधन ये सेरा एहि रिषि पेय बहन अछि,  
बाग जे कठ सहावि सकए नहि गीत हमर से गेय बहन अछि,  
राणी टिकनराणी रनि रिचवए जन-जन ये श्रेय बहन अछि ।

यदि नहि यान बूमत मैथिल छनि जेना न जेना गेनीह रैदेही,  
भेनीह भूमिगत लोकक बहितह सुधि सरेदनशील, सुगेही,  
उ छनि मैथिली, गहो मैथिली शिका मन ये उठगछ मेही,  
किए कि नरका लोक नहोत अछिमाह-साहित्यक प्रति नहि ह्वी ।

नजरिज्झी सुक्याव सदृश अन्वबाग गेगत अछि साहित्यक प्रति,  
से न प्रराहित हो यदि सहजहि गेगछ संस्कृति के रझका छति,  
जेना-जेना नर शिखी सत्रता नरका लोकक यावि बहन मति,  
ज्योतिक गेगत विकासक सोमा संस्कृतिक सनकेत अछि अरनति ।

अरुसा मासैय सँ उपगत गेगछ छितिज पव हमर छेतनक,  
जखन तके छी गगन भरिभरक एहि सध्या ये अपन जीवनक,  
भेन जा बहन सिमष्टि संकटित आपकतामय शीत जन-जनक,  
शिरक अकर्म ये नुछन रिसवि प्रवातन यान सधनक ।

शिवदानन्द दास परियन  
४ अगस्त २०१२, नगा दिनी






এ বচনগৰ আগল মতৰ [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) লৈ পঠাও ।



সুমিত আনন্দ- বিগেট



ISSN 2278 - 3016

**UDBODHANA**

*A Contemporary Research Journal of Humanities and Social Sciences.*

Udbodhana is a portal of Sarasvat-Niketanam which is dedicated to upliftment of Sanskrit & Sanskriti.

Corporate Office: Flat No. 162/2,  
Ground Floor, VIP Nagar, Kolkata,  
West Bengal, Pin-700100  
Phone- +91 97488-75-447  
[www.udbodhana.com](http://www.udbodhana.com)

Mail to us at: [paper@udbodhana.com](mailto:paper@udbodhana.com)

---

Ref. No. ई-शोध-पत्रिका उद्बोधनक लोकार्पण Date-

ई-शोध-पत्रिका उद्बोधनक तेसर अंकक लोकार्पण स्थानीयल-ना.मिथिला विश्वविद्यालयक विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे दिनांक २५.०२.२०१३ के भेल। एहि शोध-पत्रिकाक लोकार्पण करैत विभागाध्यक्ष डा. धीरेन्द्रनाथ मिश्र कहलनि जे वर्तमान समयमे शोध-पत्रिकाक बहुत बेसी महत्त्व अछि। एकर उपयोग सबसे अधिक शोधकर्ता लोकनि करैत छथि। पूर्व विभागाध्यक्ष डा. वीणा हाकुर कहलनि जे चारि भाषाक समेटने ई शोध-पत्रिका सिद्ध करैत अछि जे मैथिली आब अन्य केनो विकसित भाषासँ कम नहि अछि। आगत अतिथिक स्नातक करैत विभागक प्रोफेसर डा. रमण आ आलोक गुप्तामे कम्प्यूटरक महत्वपर विस्तारसँ चर्चा करैत कहलनि जे एकरे देन सिक इनटनेट जर्नल। देश-विदेशमे लोक एकट्ठा समयमे एकर उपयोग कर लाभान्वित होइत अछि। एकर हार्ड कपी सेहो दपबाक चाही।

एहि अवसरपर विभागक शोध छात्र-छात्रा (भू.जी.सी. जवेषक जवेषिका) लोकनि तथा अन्य छात्र-छात्रा गण सेहो अपन-अपन विचार व्यक्त कयलनि जाहिमे प्रमुख छथि श्यामानन्द शण्डिल्य, सुरेन्द्र भारद्वाज, अमृता चौधरी, अर्चना कुमारी, किरण मिश्रा इत्यादि।

अमृता, अर्चना एवं शीतल केर मङ्गलाचरणसँ प्रारम्भ भेल कार्यक्रममे मंच-संचालन एवं धन्यवाद आपन कयलनि उद्बोधनक मुख्य प्रशासनिक पदाधिकारी सुमित आनन्द तथा अध्यक्षीय भाषण डा. धीरेन्द्रनाथ मिश्र कयलनि।

सम्वाद - सुमित आनन्द  
Sumit Anand

---

**FOUNDERS:**

**Shri Bipin Kumar Jha**  
Cell for Indian Sciences and Technology in Sanskrit  
H&SS, Indian Institute of Technology, Bombay, Mumbai  
&  
**Dr. Mukesh Kumar Jha**

[udbodhana@gmail.com](mailto:udbodhana@gmail.com)  
+91 97488-75-447/8627-93-83-98

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते । कानेव चाभिरमयत्यपनीयखेदम् ॥  
कीर्ति च दिक्षु विपला वितनोति लक्ष्मी । किं न साधयति कल्पतेव विद्या ॥

**Chief Administrative Officer**

**Shri Sumit Anand**  
B.A. English (Hons.)  
Sangeet Prabhakar  
Managing Editor Society Today  
Mob - +91 9006496364



ई कनापब अगन यतब [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पछि ।



जगदानन्द या 'मनु' - दूठि बिरुनि कथा  
ग्राम गोलुठ - हरिपुर डीहठैन, मधुबनी

## १. लेनाक सलस

“सामने छुह राजि गेलहि एखन धरि लोआ नहि आएन । भगवानपुर रानीक सेहो अता पता नहि । जा कए भगवानपुर रानीक अंगना देखे छी कि भेलहि ।” अ दूद अछि एक गेष्ट माएक मनक जौनक दस बरबक लेना दिनक एगावह बजे अपन काकी भगवानपुर रानीक संगे काली पूजाक मेला देखे जेन गेल छुह दूदा साम पबि गेलो बादो एखन धरि नहि आएन छुह । लेनाके अपनासँ दूर केखलो छोरिक जेन ओ तैयार नहि दूदा लेनाक मेला देखेक जौनसाके देखि ओकरा नहि लोकि पएनिह । जँ अपन जगतथि तँ रौनिक हजना आ ओहिसर सँ लेसी खचकि डब सेहो, कोनो ना पछिस कपेयाक अनुजय कए लेनाके काकी संगे पठा देल बरहि ।

की भेलै किएक देवी भेलहि एहि उपेवरुनमे बरहि की भगवानपुर रानीक शिर्द लुका कनमे कतेसँ पबनि । देखनि तँ भगवानपुर रानीक आ लुक लेनाक संगे संग गायक आओर लोकसभ हँसत बजैत हथमे माथपब मोड़ । मोठवी लेल आलैत ।

माए मठसँ आगू रति अपन लेना नग जा ओकर दाठी छुनि, “एना दूह किएक सुखएन छौ, किछु थेनए पीनए नहि ? पाग हएरा गेलौ की ?”

दूदा लेना छुपछाप ठाव ।

भगवानपुर रानी, “ते बलि तेलव अ लेना, लेना ले बूढरा छौ ।”

माए, “किएक की भेलै ।”

भगवानपुर रानी, “सगरो मेला हूयक बादो किएक एका पाग खचि कबत, ले थिलोना, ले मिठाग, ले कोनो खए पीरक चीज, भवि मेला पागके दूहठीमे दरल छुपछाप सब रसुके देखेत बरहे ।”

माए, “किएक लोआ, किछु थेनए पीनए किए ले ।”





लेना चुपचाप अपन तथ पाछु केले ठाव । माएके चुप भेला बाद अपन तथके पाछुसँ आगु अनि, तथामे बाखन डिवा माएके दैत, “अ”

माए डिवाके देख कए, “अ चप्पन, केकवा जेन ?”

लेना, “तेरेव जेन, तँ खानी पेएले चलेत छलै ले ।”

माए मठे लेनाके अपन कलेजसँ तगा सिलेले कलेत, “हमव सोन सन लेना, भवि दिन भूथे पियासे अपन सभ्ठा सभ्थके यावि कए हमव चित्तु कएतक, हमरो ओवदा तथ कऽ ज़ीरए हमव ताना”

## २. बरक तथी

दिनीक कनाठ श्रमिक प्रशिक्ष काली लडुसक आँगन । तृकमिक साँम द्वाद मलनगरीय रिजनीक दूधसन गज्जोतसँ काली लडुसक आँगन चकमागत । एकठा गेल ठेरुनक टाक कात बखन टाविठा कसीमे सँ तीनठापव “अ”, “र” आ “स” लेसन गप्प कलेत सगे कालीक टुकीक आनन्द सेहो जेत ।

“अ” आ “र” के रिक्त रात-टितमे गवमारठे आरि गेलै । “अ”, “बह दियो अलक वृते नहि लेएत ।”

“र”, “हाँ अ की कहनीसो हमवा वृते नहि लेएत, अहाँ बूमते कि छिसो हमवा बालमे ।”

“अ”, “हम अलक बालमे लेसी नहि बूमै छी पवऽ अ ले .....”

“र”, “हे आगु जूनि किछु राज, अहाँके नहि बूमन जे अलक सोना के लेसन अछि ? हमव बालके नखठा रखाडी बहनि, दलानपव सदिखन एकठा तथी बालन बहत छनि । हमव पवरारके चानीस गायक मोजे छनि । हमव माया एखला रिहवक राजदवरावमे तेनात छथि । हम स्वय एलिठाम योगाक क्वास बास्वपतिके दे छियनि ।”

“अ” आ “र” क गप्प रते देवीसँ चुपचाप सुनेत “स” अपन कालीक घृष्टे थमे कएना बाद खानी कपके ठेरुनपव बथेत, “यो हम आर चनी, अलक दूके तगक्वासक गप्प हमवा नहि पटि बहन अछि, हम तँ रस एतरे बूमै छी जे हमव अलक बाल-बाला आ स्वय हमवा सभमे एतेक वृता लेगत तँ हम सभ एना दिनीमे १३-२० हजारक लोकरी कए क” आ भवक मकानमे ज़ीरन रिता क” अपन-अपन जिनगीके नवकमय नहि बनारितह । ओनाहिने आज़क समयमे तथी भिखगा वथे छैक आ दोसर बाजमे पेष्टे ओ गोसित अछि जेकवा अपन घरमे पेष्टे नहि भवि बहन छैक ।”

“स” के एकट्ठक तित द्वाद सल गप्प सुनि दूक द्वाद चुप । “स” सेहो अ गप्प रजेत छिलेत छलेत निसाक सकवमे ओतएसँ रिदा भए गेल । द्वाद ओकव रगतक ठेरुनपव लेसन हमवा “स” क गप्प सए ठेका सल नागन ।

\*\*\*\*\*

अ कनापव अपन यतव [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव पछि ।

## ३. पद्य



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मास ६४ अंक १२७)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर - अनित - गजन १-२



३.२. प्रदीप प्रसाद - गजन



३.३. बिन्दुशेखर ठाकुर - हिसार जिनगीक



३.४. रमा काल सा. लैलीक स्वप्न



३.५. गंगा मल्लिक-कविता/ लैलीक एक दुष्टी पाति/ गजन



३.६.१. जगदीश प्रसाद मण्डलक गीत २.



मनोज कुमार मण्डल- ४ गेष्ट कविता



३.७.१. बाबुदेव मण्डल- कविता/ बज्जित एकमत २.



बामननाथ साह- सुवन खेत आ भुवन पेट



डॉ. ए. ए. कामत कथा/ आनन्द कामत



जगदीश चन्द्र ठाकुर अमित

गजत

१

अपन-अपन हम प्रणमे छी

महाभावतक बगमे छी

अहाँ अर्धक संग ठाठ छी

बम् अतिम ऋणमे छी

धवतीमे छी अग्नवमे छी

हम सृष्टिक कण-कणमे छी

अपने नगमे ताकू हमबा

ह'म अर्धक नयनमे छी

नीक नल्ले छान-तलेगन

शिरक नीतगनमे छी



सुखमे छी हम दुखमे छी

जा मोलक रक्कनमे छी

हमब अछान तक हे याता

ह' म अलीक शिवणमे छी

२

रीतन दुख के रात करै छी

भोले-भोले पाप करै छी

सग अहाँ के किछु ले जाएत

हमब-हमब की जाप करै छी

शिष्टक लागत तीव द्वादशमे

किए एना आघात करै छी

अहाँ की रूमरै कष्ट अतारक

कोना सामस प्रात करै छी

परिले येन केरौ उज्जवकेँ

आर येनकेँ साक करै छी

दुख आएन सुख आरि बहन अछि



किएक राप ले राप करै छी

भबिसक हमर कर्मक बन थिक

जाऊ अहाँकेँ मार करै छी

ई कनास अपन मन्त्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउ ।



प्रदीप प्रसाद

गजन

दोसरक गीत उगरे अछि चान मीता  
हमर गजलो गले भूषक गान मीता

आर कदन बनर ले हम गछर कहियो  
जवन पेसेस उठै ले सब तान मीता

भेन बहूआस तगमाके नीक दोस्ती  
रिन ठेका छी सभा मन्त्र आन मीता

जैत देरै अहाँ हम बखरै हनसिके  
गाय बूढो अपै रिध दान मीता

पाँतमे हम अछोपक छी भोज आगत  
प्रसाद नग बिकर आ ले मान मीता  
2122 1222 2122 सर पाँतमे

ई कनास अपन मन्त्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउ ।





बिन्दुशेखर ठाकुर

### हिसार जिनगीक

मार्च महिनाक उतवारहमे आग हम मूल्के देखलौ

स्नाने छलौ/ सोचले छलौ

मूल अवलु सुन्दर लोग छै

सबन लोग छै

झुदा यथार्थ रिक्त कबक

रिक्त अलग पैलौ।

भयानक आ रिक्तान कप देखि

हम डबस पानि-पानि भऽ गेलौ।

आर एठास-

मूलक कठिमेवामे हम अपन

भूत, रतमान आ भुरिष

स्पष्ट देख बलन छी ।

एखन धरि अनुमानित हम

३. नाथक दाक पीले रूप

२. नाथ ३० हजार १०० क माउस खेले रूप

कठौ अपन नुठेलौ/ कठौ दोसबके नुठेलौ

एनामे ररदि भेन रूप हमर जमा

३. नाथ १३. हजार ।



आग हम सोछैत छी-

एँ बकसमे सँ किछु पढ़ागमे नहोले बहिरै तँ

आग हमरा पास कोनो रिश्ताक डिग्री बहिरै

किछु पैसा स्नायुमे 'थर्टने' बहिरै

तँ हमर शरीर कोनो रीमावीक घर ले बहिरै

अथरा

उ कपैया रचन बहिरै तँ

अपन देशक कोनो नीक शहरमे

आनखिनि मलन बनन बहिरै

झुदा दुर्भाग्यक गम्प, एहन किछु ले भेल

बनत: हम नर्कक छ्कुर काँटि बहन छी

आ एखनो बाति-बाति भवि

सादा पन्नापर

कतयक लोखसँ

जिनगीक हिसार करैत छी

रस हिसार करैत छी ।

एँ कनापर अपन यंत्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउ ।



बमा कानु भा, सोराठ

लेखक हस्ताक्षर

थाक गे हमर मन



नाछै भोजीक रीति

हमरा संग ।

रजए पायन छुमा छुम

छोड़ क मन पनियाग छै बसगुना सन ।

पहिले चगा ठाँठ बगले जइली

छोड़ । सभकेँ देधारए दुनियाँ ।

की कमान केनी हमर नरकी कनियाँ । ।

थाक गे हमर मन

उठनी नहवा कए ठाँठ पछेपछा कए ।

मारैए कनखी मछेकी

हाय ले केलेन कनियाँ नछेकी । ।

थाक गे हमर मन

ए कनासब अपन यतब [gqaj\\_endra@videha.com](mailto:gqaj_endra@videha.com) सब पछाड ।



गवा मल्लिक

करिता/ होलीक एक दृष्टी पाति/ गजन

१

करिता

-----



न२ चतु नदीक पाव सखी,  
उग पाव हमर प्रियतम छथि ।

हम केशि सजेलौं गजबास,  
नयन नगेलौं कजबा तै,  
ले अरकली क२ तानी सै,  
भेन ताजसँ गान गनारी तै,  
अहाँ धर एहन पतराव सखी,  
न२ चतु प्रियतमक गाय सखी ।

सजि-धजि क२ नयन रिछौले छनहुँ,  
नयनन ये सपन सजौले छनहुँ,  
तडपेत अछि आरुन आरुन मन,  
गहो पीव ले सहत हमर तन मन,  
अहाँ कर किछु जतन उपाय सखी,  
न२ चतु प्रियतमक ठाम सखी ।

प्रियतम जौह छथि राठ हमर,  
लैबिन भेन लेन, नदीक नहर,  
तविणी तै लोका भरुन पडन,  
नारिक सुतन निसभेव बनन ।  
अहाँ कर ले एको छन देव सखी,  
नारिककेँ तुवत जगाउ सखी ।  
न२ चतु नदीक पाव सखी,



उग पाव हमव प्रियतम छथि ।

२

## मेनक एक दृष्टि पाति

-----

बगक हृदय मचन पिया रसती

होरीये,

सरलक मेनमे उमग भवन पिया रसती होरीये ।

छे भगक तबग मचन पिया रसती होरीये,

रुठरो दिखव नाली पिया रसती

होरीये ।

बाधा छथि ज़ीरन आ मेल्नति

छथि थाम यो,

सभ तयकेँ काज दियौ रूत

ज़ीरन आसान यो ।

हिसा आ ह्वन दभक होनिका

जवा दियौ,

कष्टताकेँ छोडि बग दोस्तीये

बगाड यो ।

नारी नावायणी थिकी, ह्वनका

मान समान दियौ,

जिनकासँ ग सृष्टि छे, ह्वनक

शीजि जगाड यो ।

३



## गऊन

-----

गमाडु नै गेली अ छुन राते लेरातमे

हमर हृदयसँ कून पवाग सलेए ।

देखु नाजसँ गानक गुनार धिन गेल

लोगक लेनाक काँठ लेहिसार गलेए ।

लेना चितरन अरुडपन देखेत छी

कोना झुकी मिसरियापव जान जलेए ।

अब कोमलकनी छे बस सँ भवन

मन भँवरवा रोवायन से जानि पड़ेए ।

मोन कागुनी रयाव रनि मस्त मगन

सिन्धु नाजसँ झुखवा गुनान भलेए ।

कप चर्चा पसवि गेल गामहि गाममे

कोना छनते लोग दिलेमे राठ हेलैए ।

आखर-15

ई कनासब अपन मतबर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) सब पठाउ ।



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA



१. **जगदीश प्रसाद मण्डल गीत** २.



मनोज कुमार मण्डल- ४ छोटे कविता

१



**जगदीश प्रसाद मण्डल**

**जगदीश प्रसाद मण्डल**

**गीत-**

**समय केव....**

समय केव भूतानिमे

जिनगी लोहिया गेल ।

जी-रन रन जीरन रीच

लोहियाएन रष्टे बठिया गेल ।

समय केव..... ।

सजत-रसत मन श्रुतिक



रिष-रिसागन रलैत गेल ।

उज्झा -उपष्टि माड-सकाव

सख्खा शिख लोपा गेल ।

समय केव..... ।

घुमि-ताकि जखन पाछु

मड्डि अखन मेघ पकड़ १ गेल ।

हवन-मवन रष्ट-घाष्ट

घटिया घाष्ट घटा गेल ।

समय केव..... ।

पकड़ि पएव चाबि पलव

अस्ति-चन-अस्ति भेटैत गेल ।

घेबि-घेबि घेष्ट घेघिया

दूखा-दूख कहैत गेल ।

समय केव..... ।

२



मनोज कुमार मण्डल

चाबि गोष्ट करिता-





## ले मन । क२ ले कनी रिश्राम

ले मन । क२ ले कनी रिश्राम  
चन्ध पडवे दूव छै अपन गाय  
बकमे तू जेते कान  
दौड पडवे तते कान  
जयसँ चलेत साँस बन  
हएत तेकरो ले छै तय कान  
ले मन । क२ ले कनी रिश्राम  
चन्ध पडवे दूव छै अपन गाय ।

चलेत चन आ बढेत चन  
भ२ जेते कएक ठा काज  
मेघ नगत छै कथन बरसत  
कमे भ२ जेते काज  
चन्ध पडवे दूव छै अपन गाय ।

अखन-तखनक लेड । छोड  
जखन अतमेमे बकवे काज  
राठेमे दिरस कठौ  
जेमे कथन गाय ।  
ले मन । क२ ले कनी रिश्राम  
चन्ध पडवे दूव छै अपन गाय

जेमे कथन गाय... ।

अपन ले छै मनात  
बकमे अतए सद्दिकान  
जेतरा दोग सके छै दोग  
ले तू लेह-लेह चन  
ले मन । क२ ले कनी रिश्राम  
चन्ध पडवे दूव छै अपन गाय

जेमे कथन गाय... ।



## भार भवन अछि मनमे

भार भवन अछि मनमे  
केहन एतना अछि नाटारी  
हाथ लमव अछि खाली  
अंगनमे अछि रखावी  
पब नीज अस्मितावसँ छी ग्यावी ।

छद हाथमे कसत अछि सम्पति सारी  
छाँह सदिखन जे बह  
तिनका चाली रडका सरावी  
समता मयतामे कसत  
नागत अछि दुनियाँ दारी ।

प्रकृति सदासँ सम छै  
तखनो रिसम लम छी  
मेघक रुन्न आ सुकजक किशो  
मिलैत सभके समान छै  
तखन किछक एलेन समाज छै ?

उपजेतक जे किओ अन्न सब नः  
ओ अपन शोषित छसि भूख मिछाए छै  
गो सेरासँ सटित पुष्पा  
छिलैत घास रितलैत जीरन  
दूष नः जी जवन छै ।

## के छथि धर्मयो

केहन सुन्दर केहन निर्मल  
दीन बहिरो उपासनामे नागत  
अपन सासक आसमे ओ  
सरलक प्राणक अन्तर दान  
दः बहन छथि थैतिलर किसान  
कछ एहेन के छथि धर्मयो ?

नाथ जकबति बहिरो ओ  
झूठपब झुकी बखल छथि  
अपन पीड़ । छोरि ओ  
पब पीड़ । अपनोले छथि  
धूप छालक कोन पबराह  
मेघ रबसँ आ माघक जाड  
सतत उपासनामे नागत किसान  
कछ एहेन के छथि धर्मयो ?



## 547X VIDEHA

ও কর্মরীৰ ও ধর্মরীৰ  
জে কৰএ সএহ বনএ ধর্মক নীক  
ভনহি ও ঞপনে বহেত ককীৰ  
কর্ম পথপব ঞপন জীৰন  
ঞপনেহিসেঁ হোম ক২ বহন চুখি  
সমএ-ক-সময় নর-নর ঞন্ন  
সভকেঁ ভোগ নগা বহন চুখি  
কছ এহেন কে চুখি ধর্মায়ো ?

কতএ ভেঠেত এলেন তিয়াগ  
বিনু তিয়াগে ঞীতি কোন হুত  
করি তাকি বহন চুখি  
ঞ তিয়াগ গনী-গনী  
ভেঠেননি ভনহি কেত্রে ভনী  
বিনু করিক করিতা বনন ঙৈ  
জীৰন হুসী গারি বহন ঙৈ  
কছ এহেন কে চুখি ধর্মায়ো ?

লৈ জীৰনমে কোলো চুদ  
লৈ চুখি কোলো মহত  
বিনু মাগন মিবদগ  
হাব নীকনি বহন ঙৈ  
ঞভয তান  
জে সুনত সে ভ২  
জএত মালোমান  
কছ এহেন কে চুখি ধর্মায়ো ?

## রচন

রচন ও সুখদ পন  
জতএ লৈ কোলো দুখক দন  
ঘত-ঘটেমে ভবন ওজ বন  
লৈ দুরিধা ঞ লৈ চিতা চন  
ঞগন হরামে স্বতত জীৰন  
ও সিলেহ ভবন স্রুচদ পন  
কসন কোনা কতএ দন-দন

রচনক ও সাক মন  
উজ্জব ধপ-ধপ ক২ বহন চন  
লৈ বাগ ঞ লৈ হ্রম জগন চন  
ি সিলেহ পারি ওমগ ওমলৈ চন  
ঞপন পবাব লৈ নগি বহন চন  
বহতি পানি চলেত জীৰন  
সুন্দর মন কাবীচ জীৰন চন

থেন-থেন হবিদয় থেন  
থেন ত জীৰন বনন চন  
বনারী কেতেকো দিন কাগজক নার



जे पानिमे लेलेत छन  
लेस काठे ओ गाडी बनेत छन  
बिनु राठे सबसठे दोलै छन  
कोलेछी खतवा ले जानि परै छन

नीक अनाह किछु ले  
सभके सभ एकर बग नलै छन  
छन ले प्रपट केने  
छनी सन जीरन चमके छन  
ओ रचसक सिलहीन पन  
किछु यदि अछि किछु भुना गेन  
जानि ले कतए बिना गेन ।

ई कनास असन यतए [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउ ।



१. बाजदेर मण्डन- कटिगब/ बजेत एकान्त २.



बायबितास साह- सुखन खेत आ भुवन पेठे



१. बाजदेर मण्डन

दूष्टा करिअ

कटिगब

केलेन टीज अहाँक नगत नीक

हमरा भेटैत ओहीसँ सीख

दोलेत बहैत अछि तन

अलस्य करैत मन

रिचवण करैत धरासँ गगन

पैघ पहाड़ आ कण-कण

कतेक रहैत अछि मोव

बाति-दिन आ साँस-भोव



डुमैत बँ छी अपन भूष  
तर देखै छी अलक दुष  
कम्पनामे देखै छी भ२ क२ मूक  
परसित छी अल नग सुष  
तैयो भ२ जागत अछि चूक  
कल रदलैत अछि अलक कष  
आर देखैरक अछि मू-छि  
ओ लूत केलै रिछि  
ए देखै छोछ पड़त यो मि  
तर रना सकर ओ छि  
घेबलै अछि मोलक कड़ि  
रितन जागत घड़ि-पव-घड़ि  
अली छी असन प्रलरी  
वेड़ कड़ि वेड़ कड़ि ।



## बज्जैत एकान्त

बज्जैत अछि सुन-मसान

कियो ले दैत अछि कान

गल्लैत बहैत अछि अनवरत गान

जुग-जुगसँ सटित त्रान

टाक भव स्रवक घमासान

सुनलै ठाढ़ अपनहि गान

हवफण दैत अनुपम दान

रिनु शिरदक बज्जैत त्रान

स्रव सुनैत छी किन्तु अछि चुप

केलेन छत स्रवक

रागी अछि एतेक मध्व

तँ कप हेटै केलेन अनूप

रैसन छी एकान्तक कोड़मे

भ२ बहन सर्जना मनक गोब-गोबमे

यादि अल्लैत अछि कवय

छूटै बहन रक्ते भवय

सुनि बहन अछि हमब कान

शान्तिक धन-धन गान

रविस बहन सुन-मसान



क२ बहन छी पारन स्नान ।

२.



बभरिनास साह जीक

करिता

सुखन खेत आ भूखन पेट

सुखन खेत जलैत जजाति

खेतक दाववि देख-देख

दबकि कलज्जा जलैत बहलै

पानि रिनु खेत रज्जव भेलै

किसानक तकदीव जबलै

की खा रटेते पवान

महगैया तेतर डै

पूजा पतीक हाथे

सबकाव रिक्तन डै

डियारसठि रथ अजादीक भेल

देशीक किसान कगाले अछि

भवन नदी पानि रहति बहलै

ले रनलै बान्ह सुनीस गेट

केना जेते खेतमे पानि

ले रनलै अखनि धवि नहव



केना उपजते थेतमे धान  
मुँ रयान सकाव करे छै  
ले भेलै थेत-रिकासक काम  
देशिक जन सभ दिन दैत बहलै  
किसान अपन खून-पवान  
झुदा आग धवि ले  
सकाव कहियो देनकै धियान  
केना तेते देशिक कनाश  
सुखन थेत भूखन पेष्ट  
केना रौटते गवीरक पवान ।

ई कनाशर अपन यत्नर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउ ।



कजली कामत कथुआ/ आनखर कान्स

१

कथुआ

सर यिनि करै हमजोनी  
कारु सग गोपिया  
थेत बहन अछि होनी ।  
निना पिना नान हवा  
अछि सभ बग सुनेहवा  
आग लेबग ले बँध कोय





छाहै सोती होय या घाघड़ ।

दादी छाड़वक प्रश्न रनेते

माय दही आ खीर धियेते

राबू देते आशिन

बगा-बग होय सरलक जिनगी

जिन्हें सब नाथ रविस ।

आ अरसब नित अलैत बहै

आ येन-यिताप बनत बहै

ले हगय केकरास मगड़ ।

सबके आरावक आ दिन प्यावा ।

२

### आनहव कम्पन

देश-देशीस

एले अराज

तेयो ले रदनत

हमब समाज ।

ले होग

एकरा दबद कोलो

ले देखे आ

कोलो पाप

किएक तँ रानहन अछि

एकरा आँखिपब

काबी साँप ।



जे डसि बहन अछि

हमब सम्भावकेँ

हमब अछुटागकेँ

आ कवा बहन अछि

हमबासँ नीत पाप ।

ई कनासब अपन यत्न [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) सब पठाउ ।

बिदेह नृतन अक मिथिना कना संगीत



१. ज्योति सा टोषरी २. राजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिना) ३. उमेश मन्दन  
(मिथिनाक कल्पति/ मिथिनाक जीर-जुड़/ मिथिनाक जिनगी)

१.



ज्योति सा टोषरी



ejournal विदेह प्रथम मैथिली साप्ताहिक ई पत्रिका विदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मास ६४ अंक १२७)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA



१.



बाजनाथ मिश्र

द्वितीय मिथिला स्वागत शो

द्वितीय मिथिला (<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/> )

२.



उमेश मन्दन

मिथिलाक रसपति स्वागत शो

मिथिलाक झीर-झुल स्वागत शो

मिथिलाक जिनगी स्वागत शो



मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीर जल/ मिथिलाक जिनगी  
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/> )

ई कनिषद अपन मतलब [gajendra@videha.com](mailto:gajendra@videha.com) सब पठाउ ।

बिदेह नूतन अक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय शर्मा (मृत हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूवाद रीति उपाय)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२. दिनमस्ता- शब्द खेतक हिन्दी उपन्यास सुनील मा द्वारा मैथिली अनूवाद

दिनमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मृत साहित्यसँ मैथिली अनूवाद लेखक कथा धीक आ लेखक प्रेमर्षि)

भगता लेखक देवी-लक्ष्मी



बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदिक आ पत्रिका



मनमस्ता धर्मप्रदीप-  
रीति उपाय)

हमिषिक लेखक लेखक "मनमस्ता"- (हिन्दीसँ मैथिली अनूवाद

एपस गद्य रसिष्ठ गभीर भऽ कऽ राजन, -हे राजन । प्रवेशि यत्त कोना साधवण यत्त ले अछि । आ यत्त रएह  
कवा सकेत अछि जे लेखक अरुमायें शिष्टमे कहत गेल आठ तबलक मिथुनक दृष्टतासँ लाग केल छएत । स्त्रीक  
अवस्था, स्त्रीकें नऽ कऽ गप, स्त्रीक संग एहिड । कवर, स्त्रीकें देखर, स्त्रीसँ नुका कऽ गप कवर, स्त्रीसँ भेटे कवरक  
निश्चय आ सकल कवर आ स्त्री प्रसंगक गप कवर । 4 ई आठ तबलक अरुमायें जे पृथि: बहिर ह्वा, निष्कारन



छैलछारी ह्वा, ओ अप्पन छैलछारी कानमे कोनो गृहस्थक अन्न ले खेले ह्वा, रएत ई प्रवेशि यहु कबरारएमे सकय अछि । ह्य अरु रशिक बाजाक कतेक तबलक अन्न खेले छी । तगस ई यहुक संपादन ह्य ले कऽ सकैत छी ।

महर्षि रशिप्र धान नगौनक, लेब आँखि खेतनक आ राजन, पुष्पात्रिमे महर्षि कथपक पुत्र रिभान्दक भूमि अछि आ हुनक पुत्र भृश्रुंग अप्पन पितक सग बहि बहन अछि । ओ सब तबहें प्रवेशि यहु कबरारएमे सकय अछि । ओ उऊ शिख्राऊ कठोव छैलछारीक पानन केले छन । ओ छैलछारी कानमे ग जमले ले केनक जे मनी की गेगत अछि ।

ई यहुक संपादनार्थ अंग नरेश बाजा लोमपादक जमाए भृश्रुंगकेँ सादर आमंत्रित कबरार निश्चय कएन गेल । लोमपाद बाजा दशवधक अतिर मित्र छन । ओ नीक कानमे मनी आ बानीक सग अप्पन मित्र अंग नरेशक एतए प्रस्थान केनक, जतए भृश्रुंग अप्पन मनी शिख्राऊ सग निरास करैत छन । प्रेक्षकनित अक्षिक सग तेजस्वी भृश्रुंग बाजा लोमपाद नग रिवाजमान छन ।

गरीब मित्रक कावण लोमपाद अप्पन मित्रक रिधिरत सकोव केनक आ शिख्राऊ रिधिक अनुसाव पूजन केनक । सगे-सग अप्पन रिधान जमाएसँ अप्पन अतिर मित्रक पविचय करेनक । भृश्रुंग सेहो बाजा दशवधक रड समान देनक । बाजा दशवध अंग नरेशक एतए सात-आठ दिन धरि मित्र पालन तबहें बहि गेल । एकब राद बाजा दशवध बाजा लोमपादकेँ अग्रिमेष अनुष्ठान केँ नऽ कऽ अप्पन मनक गच्छा बरैतखिन आ एकब निश्चयसँ संपादनार्थ भृश्रुंग आ शिख्राकेँ अयोध्या नऽ जमा जेल अनुमति मागनक । लोमपाद दू गोठेकेँ सहर्ष अयोध्या जेरार अनुमति दऽ देनक ।

बायाणकारक अनुसाव, लोमपादक अनुमति नऽ कऽ भृश्रुंग आ शिख्रा महाबाज दशवधक सग अयोध्याक जेल प्रस्थान केनक । 5 बाजा दशवधकेँ रिद करैत कान लोमपाद रड भारुक भऽ गेल । दू गोठे ह्य जोडि कऽ एक-दोसराकेँ छातीसँ नगा कऽ अभिनंदन केनक ।

दशवध अप्पन द्रुतगामी दूतकेँ अप्पन नगवरासी सभकेँ समाद भेजि कऽ सूचित केनक जे रिभान्दक तनय भृश्रुंग अयोध्या आरि बहन अछि । नगवमे त्रेका द्वार रनाउन जमा, एकब सजाउन जमा । सब ठाम अंगक धूमक सुरास हेरार चाली । नगवक सभठा राठ रनवन जमा आ ओकरापव पागन छुटैन जमा, जगसँ ओकरापव कनियोठा गवदा ले बह । पूवा नगवकेँ प्रज पतकासँ अतस्त कऽ देन जमा । बाजाक आदेशिक पानन भेल । नगवमे शिख, द्दुधति आ दोसब राघवत राजए नागन । राठक सभठा कठिनाग केँ रिशुवि कऽ बाजा स-दनरन प्रेक्षकनित छन । बाजा भृश्रुंगकेँ आगू कऽ नगवमे आन । ई द्विजकमाक दर्शन कऽ नगवक लोग, हतार्थ भऽ उठन । सब कियो पवाकसी महाबाज दशवधक सग भृश्रुंगकेँ अयोध्यामे आरैत पुष्पवृष्टिसँ स्वागत केनक । बाजा अप्पन महान पाहनकेँ अतःपुवमे आनि कऽ शिख्राऊ रिधिसँ पूजा-अर्चना केनक । उतका मनी सब देरी शिख्राकेँ अप्पन रीट पारि रड खुनि छन । 6

रानीकीय बायाणकार रानकाडक द्वादश सञ्जक अनुसाव, अतःपुवमे भृश्रुंग सपनीक बहए नागन । रड कान रीत गेल । रसत हतुक आगमन भेल । दशवध एहन कानमे यहु प्रारंभ कबरार जेल रिचार केनक । एकब राद देरता सन सुकान्ति रना भृश्रुंगकेँ आगू कब जोडि कऽ दशवध प्रणाम केनक आ अप्पन रिमत रशिक पवपवाक बफाक जेल पुत्र पालक निमित्त यहु कबरार जेल हुनका रवण केनक । भृश्रुंग तखासु कति हुनकव प्रार्थना स्वीकार केनक । भूमिक आदेशिक द्वातरिक, यहु सामग्री जमा ह्वा नागन, भूमिदलमे झुम कबरार जेल महाबाज दशवधक अग्रिकेँ छोडरार रवरहा ह्वा नागन, पावगत आ छैलछारी भूमि आ पडितकेँ बजेनक । सुयहु, रामदेर, जारनि, काथप आ रशिप्र सग दोसब पडित सेहो आन । दशवध सब लोकक रिधिरत पूजन केनक । पुत्र प्राप्तिक जेल अग्रिमेष यहुक अनुष्ठानक गप दोहवाएन गेल आ रिशुस राज कएन गेल जे भृश्रुंगक प्रेक्षक हुनक सभठा कामना पूर्ण छत ।

भूमि सब बाजाक ई महान सकुपक जेल सध्वाद देनक । भृश्रुंग आ दोसब छान्ण भरिषराणी केनक जे ई यहुसँ चाकिो पवाकसी पुत्र प्राप्त छत । बाजा प्रसन्न भेल । मनीकेँ आदेशि भेटैन जे गृवजनक आदेशिसाव यहुक सामग्री जूठाउन जमा आ शिख्रीनी रीवक सकुपामे यहुक अग्रिकेँ छोडन जमा । अग्रिक सग प्रधान भृश्रुंग सेहो बहत । सबयुक उतव दिसक तैपव यहुशानाक निर्माण भेल आ शिख्राऊ रिधिक अनुसाव एमशः शान्तिकर्म



पुष्पाह रान आदिक रिझावपूरक अनुष्ठान कएन जाए, जगसँ रिझक निरावष हूअ । अहाँ सभ कियो एहन सभन प्रस्तुत कर जगसँ ए यज्ञ निरिझ रिझपूरक सभन भऽ जाए ।

मती सभ बाजक आदेशक पानन केनक आ ओग दूतारिक बारम्हा सेहो केनक । ई तबहें एक रस रीत गेल । दोसब रस रसप्रगमन भेल । अयोध्याक आमक गाछी कोगलीक कूक सँ गुँजि उठल । बाजा अग्रिमेषक दीक्षा ले जेल ग्वक रशिप्र कतए पहुँचल । ओ आगतः ग्वक अर्चना केनक आ अनुरोध केनक जे शिखरिधिसँ ओ ई यज्ञकें सभन कवारधि आ एहन बारम्हा कवधि जे कोनो ज्ञान बाक्स ए ये रिझ ले उपेन कऽ सकए । दशैक कहनखिन, -अहाँक रड ह्यव ह्यवपव अछि, अहाँ ह्यव शुद्धदए, तितैवी, ग्वक आ पवम महन छी । ई महन यज्ञक भाव अहाँ रलन कर । पुनकित भऽ कऽ ग्वक रशिप्र अपन स्त्रीकति देनखिन आ कहनखिन, -हे नरगतम । ह्य रए सभ काज कर जग जेल अहाँ प्रार्थना केन छी ।

तकर बाद, ग्वक रशिप्र यज्ञ काजमे निष्ठा आ यज्ञ रिमयक शिष्प काजमे कृति, पवम धर्मयो, वृक्ष ज्ञान, यज्ञ काज खये हूअ धरि ओगमे सेरा कए रना सेरक, शिष्पकाव, कमाव, अथाग थोदएरना, ज्योतिषी, कावीगव, नष्ट, नचनियाँ, रिशुद्ध शिखर देता आ रहुत प्रकथ सभकें रजा कऽ हुनका सभसँ कहनक, -अहाँ सभ महाराजक आठ्ठासँ यज्ञकाजक जेल अरथक प्ररक कर । जन्दीसँ हजाव ण्ठी मगारियो । रजाउन गेल बाजक बँक जेल, हुनका भोजन योगा आ पीर अदिक उपकवष हाङ कतेक बास महन रनाउन जाए । ज्ञानक जेल अरुव-पागनक निरावषमे समर्थ सकड । आराम रनाउन जाए । ई तबहें प्रवरासीक जेल गव आ दूव ठामसँ अएन भूपातक जेल सभ सुनिासँ हाङ महन तैयार कएन जाए । हाथीक जेल ह्यसात आ घोड । जेल घुडसान, सामाग्र लोकक रिधिम कवराक जेल लेन रसेरा आ दोसब दैशिक सैनिक जेल छारनी रनाउन जाए । रड बास मेहनत कए रना सेरक आ शिष्पी केँ धन आ अन्न दऽ कऽ समानित कएन जाए । सभ अपन-अपन काजमे नागि गेल । तकर बाद रशिप्र मती सुमतकेँ आदेश देनक जे ई धवतीक सभ्ठा धर्मिक बाजा आ टाक रकि सभ्ठा लोककेँ ई यज्ञमे भाग लेराक जेल आमंत्रित कएन जाए । मिथिलाक नरेशी शिवरीव सररादी जनक, देरता सन सुकातिरना कशी नरेशी, महाराज दशैकक सभुव वृक्ष केकेय नरेशी, अग दैशिक महामूर्ख बाजा रोमशादक पुत्र सहित कोशिन बाज भनुमान, मगध बाज प्राप्तिष्ठ आदि केँ अपनसँ जा कऽ सादर सकावपूरक रजउले अएन । महाराजक आदेशी नऽ कऽ प्र दैशिक नरेशी, सिन्धु सौराव आ सुवाष्ट्र दैवी र दक्षिणक नरेशीक रिशेष दूतसँ निमन्त्रा भेजल जाए । निमंत्रित दिन रिभिन्न बाजक नरेशी महाराज दशैकक जेल रहुमन बने ठेठे नऽ कऽ अयोध्या जाए नागल । राष्ट्रनीय रहुक सग सबयूक उत्तररविवा कातपव यज्ञशालाक त्वरत निर्माण भऽ गेल । नागल एना जे मनक सकससँ ए रनि गेल ।

दुनिरव रशिप्र आ ऋषिगक आदेशीसँ शुभ नक्षत्र रना दिन बाजा दशैक यज्ञक जेल बाजम रनसँ निकलन । एकव बाद रशिप्र जेलन श्रेष्ठ द्विजव ऋषिगक नेत्रमे यज्ञकार्य ग्वक केनक आ तखने बाजा दशैक अपन स्त्रीक सग ऋषिगसँ यज्ञक दीक्षा लेनक । 7

गरुव रस पूर्ण कोगक सग अग्नि भूमडनक परिष्का कऽ रापस घरि अएन । अग्रिमेष यज्ञ ग्वक भेल । ऋषिग आदि महर्षि अपन अत्रास कानमे सीखन अरुव सहाङ सुव अ रर्ष सँ सभन मत्वसँ गद्रे आदि श्रेष्ठ देरता सरलक अह्वान केनक । सभ हुनकव योगा हरिषक भाग समर्पित केनक । यज्ञशालामे तीन सए पशु राहन गेल छल आ दशैकक ओग अग्रिवने केँ सेहो ओतए राहन गेल छल । बानी कोशिला ओग अग्रिक सक्काव कऽ ओकरा तनरावसँ तीन लेव स्पर्षि केनक आ धर्म पानन कवराक गठ्ठासँ ओग अग्नि नग एक वाति निरास केनक । सभ्ठा रर्ष दूवा अग्रिक स्पर्षिक पश्चात चतुव जिठेदिय ऋद्धि रिधिसँ अग्रिकदक गृदा निकानि शिखराङ रिधिसँ पकोनक । ओग गृदाक आहूति सेहो देन गेल । बाजा दशैक अपन पापकेँ दूव कवराक जेल ओकर धूआँ सृजनक । अग्रिमेष यज्ञक अंगभूत जे हरनीय पदार्थ छल, ओग सभक सग सोनह ऋद्धि अग्रिमेष रिधिरत आहूति दिअ नागल ।

अग्रिमेष यज्ञ पूर्ण भेल । ऋद्धिकेँ जे धन दक्षिणामे भेठेल, ओ सभ्ठा ओ दुनिरव रशिप्र आ ऋषिगकेँ सोपि देनक । ए दूव महर्षि आगतपूरक रूँटरावा कऽ सभ ज्ञानकेँ सभ्ठा केनक । एरुव दशैक ई उत्तम यज्ञक पुष्पाहन प्राप्त कऽ मन मन प्रसन्न भेल । ओ ऋषिगसँ राजन, -उत्तम व्रतक पानन कवराक दुनीयि । आर जे कर्म ह्यव कनक पवपवाकेँ रठरे रना हूअ, ओकर सपादन कएन जाए । ऋषिग बाजक चरिष्ठा यशस्वी पुत्र लेराक भरिषराणी केनक । बाजा प्रसन्न भेल आ ऋषिगसँ एकवा जेल प्रवेष्टि यज्ञ प्रावत कवराक जेल अनुरोध केनक । 8 ओ कनी कानक जेल धान नगा अपन भारी कर्तरक निष्ठा केनक । लेव धान भंग भेनापव दशैकसँ राजन, -बाजन । ह्य अहाँकेँ पुत्र प्राप्ति जेल अग्रिमेषक मत्वसँ प्रवेष्टि यज्ञ कवर । नेदोडि रिधिक अनुसाव, अनुष्ठान केनापव ए यज्ञ अरथ सकन ह्यत ।



भूमिगत अपन जुगल महान टिकिसोशिली छन आ शीब रिकानमे लुकव गरीब पठा छन । ओ दीर्घकाल धरि आयरिदक सेहो अध्ययन केले छन आ ओगमे अर्थ प्राप्त केले छन । ओ राजा दशरथ आ लुकव तीन् वानीक टिकिसो शीअरीय परीक्षण केलेक । ओ ओकरे द्वातरिक जड़ १-वृष्टी आ आयरिदिक गुण सहाज समिधा सेहो एकठा केलेक । १० पवम तेजस्वी भूमिगत पुन भेठेराक उद्भव प्रवेष्टि यज्ञ प्रारंभ केलेक । ओ शीत रिपिक अनुसाव, टिकिसोय गुण सहाज समिधा सबक आर्ति अग्निये देर शुभ केलेक । ई महान यज्ञमे देरता, सिद्ध, गंधर्वा आ महर्षिगण अपन अपन भाग ले जेन पहुँचन । पापी सबक रिनाशि आ सतक कलापक जेन सभ्ठा देरता यज्ञस्थल पव उपस्थित भेन आ अपन भाग प्राप्त क२ यथेष्ट आशीर्वाद देलेक । यज्ञकाल आशिर्वाद तैयार भ२ गेल । ओ शीबक कपमे तैयार कएन गेल । प्रदक्षिणित अग्निक समान ओ दिरावनि दैदीप्यमान भ२ बहल छन । ओ जयुनद नामक सुरंगसँ रनत रड़ पैघ बास पवातमे छादीक ठकनसँ माँपन छन । आशिर्वाद तैयार होराक संग एकव शुभ सभ दिशामे पसरि गेल । भूमिगत अपन सकलतासँ प्रकृति छन । ओ यज्ञस्थल ओग अयोध आशिर्वादसँ भवन पात्रकेँ निकानि महाराज दशरथकेँ देलेक आ कहलेक, -बाजन । अहाँ एकवा ग्रहण कर । राजाक अतःपुत्रक स्त्री सभमे हर्षोन्नति भवि गेल, जेना निर्भनकेँ करवक अजाना भेठे गेल । राजा ओग शीबक अप्पा हिस्सा महारानी कौशल्याकेँ देलेक । लेब रचन अप्पा हिस्सा बानी सुमित्राकेँ । लेब दूनुकेँ देलाक बाद जेतक शीब रचन छन ओकर अप्पा हिस्सा बानी कैकेयीकेँ आ लुकव देलाक बाद जे शीबक अरुणिष्ठ भाग रचन, से छतुव नलेशि किछु सोचि-समन क२ लेब सुमित्राकेँ द२ देलेक । बानी श्रेष्ठा आ रिश्यासपूर्क ई आशिर्वाद सहाज शीबक सेरन केलेक । जन्दीये ओ अतः-अतः गतिपारण केलेक । (देखू पविशिष्ठ क)

(क्रमशः)

ई वचनापव अपन मतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव पठाउ ।

राताना छते



जगदीश प्रसाद मन्त

रात उपवास

ले पाछे





१

मैथिलीक परीक्षासँ तीन मास पूर कोठरीमे रैस बाधामोहन अपन दिन-दुनियाँक समुच्चये सोछैत बहल । ओना परीक्षाक तैयारी लेन रैस पढ़ैत बहल ह्मदा किछु समय पछाति जखन पढैसँ मन उछटि गेलै तखन जिनगीक रात उठलै । परीक्षाक काबय भवना पछाति ह्मदा अपन-जानक बन्नु भऽ गेल छलै । बग-बगक रिचाव मनमे उठै नगलै ह्मदा रक्खा पानिक बन्नुना जकाँ रिचाव उठै आ कृष्टि जाग । कोनो असुखिब रिचाव ले मनमे उठै आ ले अछैकैत बह । कोनो रिचावकेँ ले ठीकसँ पकड़ा पढ़ैत आ ले सोचि पढ़ैत । किछु समय पछाति असुखिब कऽ अपन भूत-भरिषपव नजबि अछैका गेल कबय नगत तँ तीन तबलक रिचाव अछबलै । ओ जे अपन धरि साजे-सान ह्मदा परीक्षा कृत्रये गेलेत बहन आ आगुठ बढैत गेलै । ह्मदा अपन तँ से ले ह्मदा । सबकारी देखा-लेखमे परीक्षेक ह्मदा आ बिजनछै निकत । जे लेन कवर तँ दोहवा कऽ लेब अगिला सान परीक्षा दिअ पढ़त आ जे पास कवर तँ आगु... ? आगु तँ पढ़ा ले पढ़ । जे पढ़ा ले पढ़ तखन की कवर ?

साधारण चाबि रीया जमीनरना परिवारक बाधामोहन । चाबि रीया माले अछी कष्ट । अछी कष्ट माले सोनह स्र धूव । दुनियाँ मानचित्रमे भिन्न-भिन्न देश आ भिन्न-भिन्न जमीनक महत । जे जापानक रैस किमती तँ सागररेवियाक से ले । ह्मदा मनुष्य तँ दूठाथ अछिये आ बहल कबत । थैब जे होड, ले जापानक चर्ट भऽ बहन अछि आ ले सागररेवियाक । चर्ट तँ मिथिलाचक भऽ बहन अछि तँ मिथिलाचक जमीन देख पढ़त । सरलक जिनगीयो सब बगक ।

पेगतानीस रर्थ अरिते-अरिते बाधामोहनक पिता नन्दतान पूर्ण रोगी रनि छकन छना । तीन रर्थ पूर पढ़ा क जिनगी जखन नन्दतानक मनमे अपन तँ अपनो ले रिसरास होकि जे ह्मदा जेड । रवदरना किसान छलै, आ मस्तीक किसानी जिनगी रितलै छलै जग सान सुश्रुत समय गेल छलै तग सान जेहले घरक कोठी भरैत छन तेहले गोखरिक महारपव नाक ठान नगलै छलै । ह्मदा अपन ओलन दिन-दुनियाँ खोछ देखर । अछुते थैते खोछ ह्मदा । कबलै के कबत, जखन केनिले ले तखन ह्मदा केन । दुनियाँक माछि-पानि तँ सब दिनसँ बहलै आ सब दिन बहत । ह्मदा जग समय जेहले मनुष्य बहत तग समय दुनियाँक बगे-कप तँ ओहले बहत किले ।

जखन नन्दतानक शरीरमे रोगक आगमन ले भेन छननि तगसँ पूर दू पवानी अपन थैत-पथावमे, कहियो घरदामे तँ कहियो थानमे लेणगत बहत छना । काजक एहेन सूत्र रनन छननि जे आगु-पाछु सोछै-रिचारिक रात मनमे उठलै ले कबनि । ओना साजे-सान कृत्रयक भागरतमे कातिक मास सुनैत छना जे जिनगी अणभणव छी, तँ समेकेँ रिला गमोले समर्पित भऽ किछु कऽ नी, ह्मदा से भागरते धरि मन बहैत छननि । भरि पेट भोजन भेटिये जागत छननि तँ ले घररी राठ मनमे उठैत छननि आ ले दुआर-दवरज्जा भवन देखैत छनाह जगसँ बढती रात उठैत छननि । भागरतेकेँ धर्मस्थानक धरि रात वृमि धर्मस्थानमे सुनि नगत छनाह । गामपव अरिते घरक छेरीमे जूगठ जागत छना । अपन थैत, अपन केनिले तँ अपन मनोबुद्धि थैती-गिवरुद्धी करैत छना । जग रसुक जेते जकबति अछि, पहिले ओते पुरा लेन तखन ले अनका दिस तकलै । जे से ले तकल तँ अधिक खचपनीस अनके सब किछु देखैत बहल आ अपन देखलै ले कवर ।

नन्दतानक रिशान कप जिला रूनी देखैत तहिना रूनीक रिशान कप नन्दतान देखैत । कोठरीक बाध-बानीक जिनगी ले रिशान दुनियाँक मचपव नष्ट-नष्ट रनि दू-पवानी कखलो थैतक गेलो कोदबिस होड, तँ कखलो सग मिनि धान रोपैत । कखलो मान-जानक खगव-गोरव करैत, तँ कखलो गहानुसार खग-पाँचक ओवियान करैत । जिनगीक नीना तँ नजाग-धकागक प्रश्न ले ।

तीन सानक रीच नन्दतान तेना-रोगा गेलो जे मन मानि लेनकनि जे अपन ले जीर । चन-चलैक राठपव अपन गेलो । ह्मदा एते दिन तँ अही समाजमे समाज रनि जिनगी गुदस केनो, ले किछु अनकव केनै, तँ केकरो भारो तँ ले केनै । मेहक रद्ध जकाँ किसानक सग थैत-पथावमे बहल केनै । तग रीच छैलक





गीबल कचकि उठननि । कचकि एतेक जेबसँ गेननि जे बूमि पड़ननि सौसे देलक शिङ्कि केँ टिन्न-डिन्न क२ देत । झुदा ग्राँ तँ भेन देलक रोग, मनकेँ तगसँ कोन मतनर । ओकर तँ अपन सब किछु छै । झुदा शिबीक दर्दक पीछा क कछु तँ प्रभावित कगये देल बह । पीछा एत मन, शिबीक रेखा देखि लंग-लंग अपन लोबिया-रिस्तब समेटैत बूद-बूदएन- “जखन दुनियाँ छोड़ा ये बहन छी तखन किछु ले अन्तिम रात कहिये दिई जे, भाय जे केनियह से खेनियह, किछु जमा तँ बहन ले जे देल जेरह । एकरा गन्ती बूमि छोड़ा दाए आकि ज़रारदेरी बूमि दोरिका छाप द२ दए ।”

नन्दानत एठाँय पडाक रगे बलोल एक गोष्टे एना । रगैया सम्पन्न मचक कताकाव जकाँ रनन-ठनन छेल्वा बहनि । नन्दानतक दवरज्जापव अरिते कामकप कामाथाक शिख कूकि घबराबीकेँ सूचना देतनि ।

दवरज्जापव आन अत्रागतक आगमन बूमि राढ़ीसँ नन्दानत आ आगमनसँ बूनी पडाजीक आगूये उपस्थित भेता । देर कप देखि नन्दानत ओसाक टोकीकेँ देह पवक त्रेनीसँ माछा-मुछा रैसक आग्रह केतनि । दवरज्जापव आन अत्रागतक सेरा कवर किसानी सक्काक दूथा अंग अदोस बहन अछि ।

रैसिते पडाजी जोगी-ककीव जकाँ अपन बड़रड ए नगनाह- “ई जमीनक भाग कह छै जे साक्षात नटुमीक रास छी, जे दोरब-चाबिरब गतिये परिवार आगू दूहेँ रठत, झुदा ?”

नटुमीक रास सुनि दू पवानी नन्दानतक मनये खूशिक छ्वाँ उठननि । झुदा एकभङ्गू लान पडाजीक बहनि । ओ ग्राँ जे जते प्रशंसा बूनीक केले बहनि तते नन्दानत ले । जगसँ नन्दानतक मनये किछु खलान-रिसलान जकब भेननि, झुदा पनिचोँ तँ आन नहिये छथि, रिचावकेँ दरननि । पडाजी तथक रेखा देखराक रिचाव राड केननि । तथक रेखा सुनि दू पवानी अपन-अपन तथ आगू रठौननि । चनाक खेताड़ी जकाँ, जे पहिले दोसबकेँ खेतलेत पछाति सराबी कसत तहिना पडाजी सेहो केननि । तथ देखरैसँ पहिले बूनीक मनये उठननि जे जेँ पतिक अछैत मूँ भ२ जागत तँ ओ पनी... ? झुदा पलाछ भेले... ? पनीक मन पतिपव एकाग्र भ२ गेननि । शुभ समाचार सुनि जेन बूनी रिहसत पडाजीक आगू तथ पसावि कहननि-

“ग्राँ तथ पति छथि, जार जार छथि तार तथ जार छी, तँ जेँ केतौ कोना गड़रड रोग से कहि दिअ । सम अछैत ओकर प्रतिकार कर ।”

बूनीक रात सुनि पडाजीक मन चपचापा गेननि । गोष्टी सुतरैत देखि, टोकीक निचा नकन पवकेँ समेटि पत्था मावि उपर रैसना । बूनीक तथ देखि खजन आँख रन्न करैत ठाँव पष्टपष्टरैत पडाजी बूदबूदना । लेब आँख थोति टाक दिशा दिस देखि उपर तकननि । जेना कियो किछु बजैक उमोहित केनकनि । रजना-

“परिवारक पछनका गति तँ नीक छन झुदा रीचमे थलक आगमनसँ गड़रड । गेन अछि । ओना अखन पवि तेनेन गड़रड ले भेन अछि, जे बूमि पड़त झुदा आगू जखन जूआ जाएत तखन बूमरै कि देखरो कवरै । ओना ई घबक साक्षात नटुमी खरी छिई, जगपव अखनो घब ठाढ़ अछि, झुदा... ?”

आगूये रैसन नन्दानतक मनये उठैत जे परिवारक गार्जन तथ छी, जेँ तथ तनु-रेखा नीक बहत तँ अन्कब अन्करो भेले कि हेतै । लेब नगले रिचाव बदन नगननि जे पनिचोँ तँ अछाँगिनिचोँ रोगत छथि तँ लूको छोड़र नीक नहिये छैत । पनीकेँ कहननि-

“पहिले पडाजी केँ चार पिअरिअ । पछाति सब गप हेतै ।”

पतिक रात सुनि बूनी चार रनरए गेली । तग रीच पडाजी नन्दानतकेँ पछननि-

“ई गाममे देरबहन कते अछि ?”

पडाजीक प्रश्न नन्दानत नीक जकाँ ले बूमि सकना । दोहबलेत पछननि-



“की देरस्थान ? ”

नन्दनानके अनाड़ी वृमि पडाजी रजना-

“जुलस्थान त हेले कबत । तेकब बादो महरावजी, शिरजी, धर्मबाज गवादि-गवादि आरौ कते स्थान हएत किल ? ”

नन्दनान- “ह, से त अछिसे । तीनठा मरादेर मदिब अछि, दूठा महरावजी स्थान अछि, एकठा धर्मबाज, एकठा सनहस, एकठा ठरुवरवाड़ी सेहो अछि । ”

तही रीच रूनी चार लेले आरि पडाजीके आ नन्दनानाके देनखि एक गोष्ट चार पीरिते पडाजी रजना-

“चार त चार अछि । रड सुन्नब चार पिछौ । ”

चार पीर हाथ धोय पडाजी नन्दनानक दलिा हाथ देखि रजनाह-

“अहाँके तीनठा रिखाह आ सातठा सञ्चन निथै । कएय रिखाह छी ? ”

तीनठा रिखाह सुनि रूनीक मनमे जननि उठननि । द्वाद किछ रजनी ले । नन्दनान कहनखि-

पहिल जे रिखाह भेल सएह छी । सञ्चलो एकठा लेठा अछि । ”

पाणि पनष्टेत देखि पडाजी पुनः हाथक लेखापव अपन आंग्रव दैत रजनाह-

“अ लेखा अँठायस आरि, एकवा काष्टि देनक । जगस दूठा पनियो कष्टि गेल आ छहठा सञ्चलो । ”

पुनः नन्दनानक हाथ छोड़ा रूनीक हाथ देखै नगनाह । रूनीक हाथक लेखा देखेत रजना-

“पति सुख अहाँके पूव भऽ बहन अछि । किछ दिन आरौ अछि । द्वाद... ? ”

पडाजीक रात सुनि नन्दनानक मनमे उठननि, भविसक अ योगियाह पडा छी । द्वाद, अएव अखन त दवरज्जपव छथि किछ राजर उटित ले हएत ।

पडाजी आगू रजना-

“अहाँ पतिके शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल छन्हि, जे अद्वैक लेखा गिवा करै । ”

रूनीक हाथ छोड़ा पुनः नन्दनानक हाथ देखेत रजना-

“अहाँके शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल अछि । अखन त शुक्रातीक अरस्थामे अछि तँ किछ ले वृमि पडैए द्वाद तीन मास रीतेत-रीतेत उपदर शुक्र हएत । ”

पतिक ग्रह सुनि रूनी ओलिा तडपनी जलिा कोलो ओवत अपन निर्दोस पतिके सिपाही हाथे जहन जागत देखै । तबसत-तनपेत रूनी पडाजीके कहनखि-

“अपने साफात देरता छिँ । जे चारले से लेते । कोलो पडानी लिंका ग्रहस छुटकावा कवा दिअन । ”

गोष्टी नान होगत देखि पडाजी रजना-



“केहेन-केहेन बाहु-केतुकेँ तँ जिनगीमे भगा चुकत छी आ गे कौन मान-मे-मान अछि । एकवा तँ छन-पनकमे कतए-स-कतए दइ आएर तेकब ठीक ले ।”

पडाजीक रात सुनि दू पानी रूनी-नन्दनानकेँ जान-मे-जान आएन । रूनी राजनि-

“खर्च-रर्चक चित्तु ले, झुदा काज पका होय ।”

घूसक मोठ बकम देखि जलिना घूसथोकक मन चपचा जागत तहिना पडा जीक भेलनि । रजना-

“देखियौ, ई काजक जेन अनुष्ठान कबए पड़ै छैक तँ सभठाँय कबर आकि कबएर सभर ले अछि ।”

रूनी- “तखन ?”

पडाजी- “तगले चित्तु किअए करै छी । तकिमक दसखत जेहेन आँकिसमे तेहेन डेवापब । तखन तँ आँकिसमे अनुष्ठानमे आरि कियो देखि ले निअ तेकब कनी... जे डेवाये ले होगत अछि ।”

नन्दनान- “ले रूमजो अहाँक रात पडाजी ।”

करना हागब जकाँ नन्दनानक मन कपैत । तँ आँकिक सोममे अपन अनुष्ठान देखै छैत ।

पडाजी- “देखियौ, हिमानयस नइ कइ सद्द धरिक रसुक जकबति अनुष्ठानमे पड़ै छै । ओते नइ कइ चनर सभर अछि ? एँठाय सभ रसु उपनछ ले छैत । अहाँ सन-सन कते भज ले छथि । हमबा नि तँ सभ रवारवि ।”

नन्दनान- “तखन ?”

पडाजी- “रिधिरत सभ खर्चक मूल दइ दिओ । जलिना अनुष्ठान पारनि माले अनुष्ठानक पूजामे एक गोठे पूजा करै छथि आ ठेन-पड़ै सक लोक अपन-अपन अनुष्ठान-कनन्दक पूजा कब नग छथि, तँ कि ओ अनुष्ठान भेल । अनुष्ठान तँ होगत अछि कनन्द जेकब गीबह-रनहनक गिनती कम होग छै ।”

हिमानयस नइ कइ सद्द धरिक रात सुनि रूनीक मन चकलेब कठए नगननि । बाप ले, कतए हिमानय अछि आ कतए सद्द । तगस नीक जे जे कहता सहर कबर असन छैत । देरराणी कोनो कि नूछड़ ह होग छै, उन्ठा हो कि सुनठा, कला हेते तैयो तँ मर-मर हेते किल । राजनि-

“केना कि खर्च-रर्च पड़त ?”

पडाजी- “खर्च-रर्च कि हाथी-घोड़ क पड़त, तखन तँ अनुष्ठान छी कनियो-कनियो कइ कबर तैयो तँ... ।”

कनियो-कनियो सुनि रूनी राजनि-

“ले पान तँ पानक उठियोस काज चना निअ ।”

पडाजी आ रूनी दू गोलक रात सुनि नन्दनान परीक्षा जेन करुनाक हागड जकाँ थ-थ कपैत । झुदा एक दिस जिनगी तँ दोसर दिस मूल सेवे देथैत । ग्रह-नक्षत्रक किबदनीकेँ कि मनुष्य लोकि सकै, केव मनमे उठैत जे, जे मनुष्य माँठियोकेँ देवता बना सकै ओ तँ किछ कइ सकै । झुदा दू गोठेक अनुष्ठान रिचाव सुनि छपे बहना ।



हूँडे अन्धकारक अर्थ नऽ पड़ार्ज सगुनियाँ डेग दैत रिदा भेला । मनमे ग़ले रात उठैत जे जौँ टारियो-पाँट एतेन सुतवत तँ सान-यान नगिसे जाएत । दूदा जे होइ, यात्रा नीक बहल ।

तीन मास रीत गेल । ले पड़ार्ज अपन परीक्षाक विजयल रूम घुमि कऽ एता आ ले दूनु पवानी नन्दनानकेँ मनमे कोनो तबलक आशिका भेलनि जे पड़ार्ज कि केतनि कि ले । तीन मासक पछाति जग दिन शनिक ग्रहक आगमनक नाँ कहेल बहनि ओ दिन नन्दनानकेँ मन बहनि । साँउनक पूर्णिमाक दिन । पूर्णिमा मन पड़ा ते मल्लिक हिसार जोड़नि तँ जोड़ । गेलनि जे आगये पूर्णिमा छी । होआगत हाथकेँ रुद्धि यरैत मनमे उठैते, गोखबिक याद सदी मनमे छान देतकनि । ओह, भविसक हाथ होआएर शुक्र भऽ गेल । राया हाथक होआएर जोड़ दिहना हास तबरा कविओनि तँ सुआस पड़नि । ओह, जारै ग्रहक आगमन ले भेल, तारै पथ-हाथक रुद्धि ओनी किछ मछै । पनेकेँ कहनि-

“बाधामोल्क माए, भविसक ग्रहक आगमन भऽ गेल ।”

ग्रहक आगमन सुनि रूनीक मनमे उठनि जे रूत रोगी ओहना होए जे रोगकेँ देखे बखनो बहै आ दरागयो आगत बहै । काजो करिबे बहै । दूदा रोगीकेँ उछागन पड़ । आराम देर सेहो तँ होए । तहमे सदी-राखब ले छी जे नृपनियाँ पीर जेर आ भनयो-भात कर । देरलोकक ग्रहक आगमन छी, ए त्रैणीक रोग... कहना भेल तँ बाजे रोग भेल किने ।

नन्दनान राजना-

“हाथो होआए आ पथो, तखन चनर केना आ काज केना कर । दूनु दिससँ तँ रोग आरिसे गेल अछि ।”

रजिते रूनीक मनमे उठनि, पथ-पवहेज कि सभ कर पड़त । सदी-राखबक तँ रूमन अछि जे गोड़ । साग ले आएत दूदा एले रोगसँ तँ पहिले-पहिले छैल भेल । होआगत रड़रड़ नी-

“जे भगरान सभकेँ रूषि देतखि ओ एक-बग कऽ कऽ किछ ले देतखि जे रोगमे पड़त छी आ पथ-पवहेज रूमन ले अछि । एले रोगीसँ कि लोक हाथ धोए निख ।”

“हाथ धोए निख ।”

दूसरँ निकनिते चमकेत शीशा जकाँ मन चनकि उठनि । जौँ रोगीसँ हाथ धोए जेर तँ माथक सिनूक की हएत । असोयकित जकाँ रूनी थकमका गेली । जग जिनगीकेँ खेत रूने छी ओ खेत ले छी जौँ खेत बहैत तँ अमेरिकसँ कते उपर बहैत ।

उछागन पकड़ा ते नन्दनान रोगाए नगनाह । प्रेम ले केले अकटि, पड़त बहल देलक अकडनसँ जोड़-जोड़क दर्द रड़-रड़त छह मास प्रलैत-प्रलैत नन्दनान भिनसुबका न्हँ आ जकाँ मोछवी माथपव लेले चन-चनाउ रनि गेल ।

असगले रूनी काजमे तेना ओमरा गेली जे काजे मानर काजे दानर रनि गेली । काज तते छिड़ि या गेलनि जे जलिया उड़-उड़त रुनिगाकेँ गिबिष्ट पकड़ छै तलिया भऽ गेलनि । काजे काजकेँ थोरै करैत आ गीबरा करैत । सामू पथ जखन काजसँ निचेल भऽ पथ मोछि आ भवि दिनक काजक हिसार मनमे अरनि तँ मनि नथि जे सभठा कर्मक खेत छी । कियो खेत खेति खेताछी रनि जागत तँ कियो खेत रनि खेताएन जागत । डाकठव एठाम जखन पतिकेँ नऽ जाग छियनि तँ सभ रोगक जड़ा भवि दिन पड़त बहर छुहि । जगसँ सोसे देलक जोड़ पकड़ा जेतकनि । लेव जिनगी ठाढ़ हेलनि एकब केन भरोस । तखन तँ मागयो-रापक नितसा पूरा कगये देनिबनि जे एकक नाति दोसरक पोता बना ठाढ़ कगये देनिबनि, कि पतिवर्ममे कमी बहल ? जौँ ले तँ पति-रिहिन नारीकेँ समाज किछ कर्तकित केले छथि ।



पतिपव सँ रूनीक नजबि उतबि लेषी-बाधामोहनपव एतनि । लोकक सिया-पुता शिव-रजावमे जा बहरो करैए, सिलेयो देखैए आ पठरो करैए । से गवदनिकष्टी हमरा सेने सेने भेलै । दूदा हमरी कि कबले जग घबमे एकठा बिद्यायी आ एकठा लोगी बहत ओग परिवारक गाढ़ी खिचर महिना जेन सचकट चुनौती छिटि । किम्मा-पिहानी ठेरो कहे छिटि, दूदा पतिव्रता परिवारक जेन केलेन समर्पित छनयि, ए दिस सेने देखक चाली । जे ले जे ठीक एक रोम बखले छी आ पनबह-पनबह दिनक रिन भूखन पेष्ट पतिव प्ररचन करै छी ।

बाधामोहनपव नजबि पड़ा ते रोचारी रिमित भऽ गेली । भगरान सभठा रिपति ओही छोट्टा केँ देनखि । दूदा ओकरा तँ कहना कऽ गोठ-गो धरि बनेलौ छिटि । आर कि ओ धीवग-पुतगव ले भेन । जू धीवग-पुतगव भेन ओकरा रूते घब चनाउन ले हेते । रूनीक मनमे सर्व भेननि । भगरान पति हबने जा बहन छयि दूदा जूखन लेषी तँ सोममे छिटिये । लेब मन उनि बाधामोहनपव एतनि, जेतरो सुख माए-रापक घब केनि तेतरो उमेव तक हम कल दऽ सकनि । ओही रोचारकेँ धरद दी जे खेने-रिन-खेने पठरो करैए आ सग-साथ दऽ काजो करैए । सग साथ मनमे उठिते रूनी बिहून भऽ गेली । सगे-साथ ले सभ किछ छी । मनुष तँ खरत-जागत बहत दूदा परिवार जे सग-साथ छिटि बह ले जिनगी छी ।



२

देखले दिनमे नन्दतानक परिवार कतए-सँ-कतए पाछु ससवि गेल, यए छी जिनगी। समए आगू दूहें ससलेत आ जिनगी पाछु दूहें, तखन समए सग केनो चनर। समाजक रीच नन्दतान परिवारक चर्च अछि कसमे होगत। प्रश्न उठैत जे समाजक कते लोकक रीच एलेन रिचाव उठैत। परीक्षामे एक शिष्टक भूतसँ प्रयातव गनत भऽ जागत जेकर परिवारमे होगत असकत। दूदा ओह एक शिष्ट, भेटैले परीक्षार्थी सकलौ तँ होगते अछि। की तल्ला जिनगीयो क शूत्र शिष्ट, अछि।

ओना समाज तँ समाज छी, अथाह सद्गुरु कहियो आकि सधन रोन। कियो नून घोड़ा नून-पनियाँ रना रोग भगलैत अछि तँ कियो नूनएन पानिके नूनगरी ठेठे स्रष्ट रना पैरा जोग बनलैत। कियो दुखलैके सुगंधक आर्द्रा दऽ नक्षत्रा लेखा खीटि जीवन-यात्रा करैत। तँ कियो नवकोमे ठाही यावि-यावि आरो गतँ दिस रदतँ अछि।

समाजमे एहलो कम लोक रजनिहव ले जे रूनीक दशा-दशा देखि चारसीयो दैत आ ठसरो करैत। दूदा केलेन चारसी आ केलेन हसी। खीस जौ हसी अरैत तँ केकरो दीन-दशापर किअ अरैत। दूदा तग सग समाजमे एहलो कहनिहव तँ अछिये जे कहैत अछि जे भयराद ओही रेटारीकेँ दिवनि जे एक सग पतिसँ पत पविक सेरा अपना राह-रनसँ कऽ बहन छथि। एक परिवारक थोती-पथारीसँ नऽ कऽ पठ १७-निखाग, रव-रामारीक सामना असगले करैत, कि हुनका जिनगीक छकी उनठौनिहव ले कहरनि। जे मिथिनाटक गौर-गाथाक गतिहस बहन अछि। दूदा तग सग एहो कम दुर्भाग्यक रात ले जे जिनगीकेँ सामाजिक जानमे ओसरा अपन कवय-भगलैकेँ दोरी बनलैत। एहलो कहनिहवक कमी ले जे कहैत पीसक मड़ आ तँ उठैत गहमक टिकस। प्रश्न उठैत जे रूनीक कि दोष जे एलेन शिष्टसँ रेटारीकेँ दगन जागत? दूदा एहलो शिष्ट, तँ ओही समाजमे कदत-कनागत अछि जे कहैत रेटारी रूनीक अपन उमेल कते भेल अछि। अधोसँ कम जिनगी ठपन छत, रसो रकिये तेते। ए केलेन निसक भगनक भेलनि जे सौसे जिनगी ले दऽ अधोसँ कमेपव अधसुधु रना देतनि। पति-पनीक रीच जे बहै तैकव तँ ओ गति टिक जेकरा मनुष्यक श्रेणीसँ निचा बूनन जागत छै आ जेकरा ले टिके ओकव गति की छत? कियो वा १७ कहि बाँझ न रनाउत तँ कियो यात्रक भदरा कहि दूतकावत। ओना एहेन गति अपन परि रूनीकेँ ले भेल छनि, कावण जे रोगएला छनि तँ पति जीरैत छनि। भनहि परिवारक गाढ़ीक जूआ असगले किअ ले थिटेत होथि। दूदा जहिना समाजक रीच, मकानक गठी जकाँ एक-एक परिवारक उपर समाजक भारो बहैत आ जीरैक आजादियो बहैत तल्ला परिवारक रीच एक-एक रजिक सेरो होगत अछि। शरीर अनग-अनग बहलौ, पानिक रीच जेलेन सगुन बहैत, से तँ बहैत अछि। दूदा रूनी तँ जानमे ओमवएन छथि। दस रजे जे रेषी नून जागत छहि ओ टावि-पाँच रजे अपरालमे घूमि कऽ घबषव अरैत छहि, तग रीच रोगएन पतिकेँ छोड़ा रूनीकेँ कते राहव जाएर उचित छत? दूदा राहो-रान ले जात से तेते? तँ कि रूनीक रिचाक सगव सृष्टि गेलै जे एक-रान पतिसँ ले राजि पारै। जँ एक दिस गाछक टावि टूटि बहन अछि तँ दोसव दिस बामाहोन सन, अनपठ पतिक जगत पठन-निखन रेषी तँ भेटिये बहन छै। उमोहमे मिसियो भवि कमी रूनीमे ले अएन छनि, जहाँ परि काजक सकनता (दिनक काज) पछाति जे मन खुशआन तँ अनेल रमकए नगनि। सौसे गायक लोक रताह भऽ गेल, राप रेषीकेँ दोषी रना भवि दिन गरियरैत बहै तँ रेषी रापकेँ गरियरैत बहै, साना रूढ़ १७ रीमे घी ठावी करैत। सानु-पुत्रेहकेँ दोष दैत जे अरठगरी घब अएन, तँ पुत्रेह रापकेँ गरियरैत जे कोन नष्टनियाँ घबमे रोजा देतक। दूदा अनेल असकव गाढ़ी देखले कि केदा कियो तेतविक रान नगोलेन अछि तँ कियो रगवक, केकरो गाढ़ीमे तगन कनाग छै तँ केकरोमे आय। अनेल भवि दुनियाँ रौआक कोन काज अछि। अपन धनक दुख भागी ले छी आकि अनेलो हयव माथ मयन तँ अहाँ रूमरो ले केनिँ आ अहाँक माथ मयन तेकव जिगेसा कवर हयव दाखिन्न बनत। मन ठमकि गेलनि।





जिनगीक दशा-दिशा देखि रूनी ठरूआ गेली । जहिना धावक रोगमे कियो भसि जान गयलैत, तँ कियो गाछपव सँ भसि जान गयलैत, कियो घबमे नगन आगि मिसलैमे जान गयलैत तँ कियो ओछागनपव पड़न गछानिक गभ रीट जान गयलैत, तँ कियो कन्यापव वैनिक भाव उठा कूनरारी पछैलैत जान गयलैत तँ कि सभ एकू भेल । एक ले भेलौं एकू भेल ? केना भेल ? नती जकाँ नतवन अछि सभ किछु समाजमे द्वाद जलिना नतीक गिवरपव कूला कूला छै आ कड़ । कड़ छै, जे ओग नतीक कून बन भेल । तलिना हव मनुष्यकेँ अपन-अपन जिनगीक समस्या तलवि उठैत बहत जलवि जिनगी जलै छी । एतेन स्थितिमे कि हएत, ओ हएत जिनगीक हव समस्याकेँ अपन तानक कूजी रना थेली । बहन रात जे सभ जेँ सए कबत तँ मनुष्यक समाज केना बनत । समाज रलेक अपन सूत्र अछि जगसँ रलेत अछि । एँठाम प्रथम बाङ्गगत अछि, सभकेँ अपन-अपन रूषि-रिनेक छुहि, कि नीक कि अपनक रिचाव तँ अपन कब पड़तनि । एएत भेला पछाति स्वतंत्र जिनगीक बस भेँलैत अछि ।

ऐठौ बाधायोलनपव नजवि गड़ । रूनी देख नगली । लेचावकेँ गवदनिकष्टी करै छिँ । अनका-अनका देखे छिँ रड़का-रड़का शिहव-रजावक कूनमे ऐठौकेँ पढ़लै आ... ? द्वाद हवरा सन लोककेँ सभर अछि । जगठायक शिक्षा गतत दिशा पकड़ि सकनोड़ि बहन अछि तगठाय कि कएन जाय, ङ तँ नहिँठौ प्रथम ले अछि । द्वाद ओली लेचावकेँ भयराद दिँ जे थेल-रिनु-थेल कून ले छोड़-ए । ऐठौक धर्म-कर्म देखि रूनीक मन तड़पन । आर छोड़ । गेठ-गेठ भँ गेल । भगरान एत बड़ बहननि जे आर जे अपनो (पति) मवरो कबत तँ एकठौ खुँहा देले जेत । द्वाद जग लेचावकेँ बचमे माय-राप छोड़ि दैत, भगरान ओग रचाकेँ केना ठाढ़ करै छुनि । सभ कि ठाढ़ भँ जाय । किछु ठाढ़ । गेठ आ किछु नहियो गेठ । आगू आर बाधायोलनकेँ ले पढ़ । पढ़ । तखन तँ जेँ अपन अपन पढ़क भाव उठा निख तँ लोकरो ले कवरे । एएत ले जे ले पढ़त तँ काजमे मदद कबत, पढ़त तँ से ले हएत । ले हएत तँ ले हएत, जँ ए एत दुष कष्टे छी तँ किछु दिन आरो काठेर ।

मेयक तलेगन जहिना अपन-अपन जगहसँ ठेक नगोले देखेत बहए तलिना बाधायोलन जिनगीक बाँट दिस देखै छलैत द्वाद ऐँतक रोन जकाँ तते-ओसरी नगन देखेत जे अहव छोड़ि गजोत भेँलै ले करै । द्वाद मृत प्रथम तँ मनमे उठिये जाय । तीन मास पछाति परीक्षा हएत, तेकव पछाति ? कि आजुक जे शिक्षा-पद्धति रनि बहन अछि तगमे आगू रढ़ि पढ़ । कून नगमे अछि, गामेपव सँ जाग-अरै छी । द्वाद घबसँ राहव भँ शिहव-रजावक अछि जूँ पढ़ । जेँ से ले तँ मैट्रिक पासकेँ के पढ़ै छै, अलिसो आ कवखनक टोकीदारी री, एम.ए. करै छै । काँट मन बाधायोलनक पियन नगले । राप-मायक दशा देखि मन लेकावू भँ गेलै । तीन मास जग आशा (परीक्षाक आशा) मे रैसन बहन से अले । जते पढ़ले छी ततरेकेँ ले योकेत बहन । किछु कवक छलै । द्वाद कतए कवक छली ? शिहव-रजाव जा लोकरी कवी अकि परिवारक सग गाममे किछु कवी । जेँ शिहव-रजाव जलए तँ माता-पिताकेँ के देखिनिगव हएत । सभकेँ अपन अछि । तखन ? तखन तँ दुगयेष्टी उपाग अछि जे या तँ परिवारकेँ सुभावि माने परिवारक काजकेँ सुभावि कः छनी अकि परिवारकेँ लेड़ा कः । रिचावमे बाधायोलनकेँ दुम देखि रूनी रजनी-

“रौआ, अथेन खुँहा रनि ठाढ़ छिअर, तू चित्ता किअ करै छर ? ”

आगू-ऐस दैत रूनी बाधायोलनकेँ कहनि । द्वाद मनमे अपन खुँहा ङ बहन जे जेँ पति मरिये जेतार तेयो एकठौ खुँहा तँ गानकि जेत । द्वाद मनमे गले उठैत जे किछु अछि तेयो प्रकष कलना प्रकथे भेल, योगी कलना योगिये भेल । द्वाद तेसरो तँ गेठते अछि जे प्रकथो योगियार गेठ आ योगियो प्रकथार । हँ से तँ गेठते अछि ।

मायक रोन-भरोससँ बाधायोलनक मनमे किछु आशा जकव जगत द्वाद जतेक जकवति छन तते ले जगत । ठमकेत मनमे उठलै, गामेमे देखे छी जे पनवह-सोनह रखरना सभकेँ केरा-पौट जकाँ पौट निकलै निकलए नलै छै । तखन हमरी कि जूअन ले भेलौं । मनुष्य राँस थोड़ छी जे समागमे पारि कोपव देत । माय-रापक सेरा ऐँठ-ऐँठक पुनीत कर्तर छी । पुनीते काज ले धर्म छी । पानिक ठेगार जकाँ बाधायोलनक मनक रिचाव आगू द्वाद ससवन । कि हमले भरोसे दू गोष्टे रैसन बहत । तद्वमे पितक एलेन स्थिति छुहि जे सानक कोन रात जे महीना-दिन गनि बहना अछि । परीक्षा देले एतले ले हएत जे मैट्रिक पासक सर्टिफिकेट



भेटे जायत । सटिकिकेट न२ क२ कि योग-योग छटै । सटिकिकेटक जकबति ओकरा योग छै जे लोकवी कबय छित अछि । जिनगीक जन तँ ज्ञान छी । माने काजक नृवि ।

तत्-मत् करैत बाधायोहनक मनमे उठैत, परिवारमे जौ किछ कबय छै छी तँ हुनको (माता-पिता) सरलक रिचाव सुनि जे नैक छैत । जौ एतेन काज योग जेकर जर्ज हुनका सरलक जिनगीमे लोपा गेन योग, द्वाद कोनो कारगरणी ओ सुधि गेन होय । ओ तँ ले जे राखक एक-गुहा जकाँ कोनो एतेन काज कबय नगी जे जते हरा-रिहावि, ठनका-पाथर आकि माछ-पानि तेते, सबठा उपर खसत । ठमकिते मनमे उठैत जखने गाछकेँ अन्तरसँ भेटै योग छै तखन जे राठ भेटै छै ओ जिनगीमे लेसी नीक योग छै । से ले तँ दू गोठेक रीच अपन रिचाव बाखर । हुनका सरलक कि रिचाव योग छहि सेहो तँ सोना आरिये जायत । संगे माथ-राबूक मनमे सेहो तेतिन जे लेठी आकाशवी अछि, एतेनो दशामे रिना पुछले, आगू देग ले रहरय छै । अपनकेँ पुछै जोगव जिनगी रना जेन, सकलताक द्वा सोपान छी । बारसक दवरावमे लुमानक आसन नमल (हुँच) तेराक काबि भविसक सयन बँ । माता-पितासँ पुछि जेन बाधायोहन जकबी ले अनिराय ब्रमनक । अनिरायक कावरी छाप मनमे पड़ैत बँ । ओ ओ जे किछ-ले-किछ जिनगीक सचाज जकब भेटैत । मातीक त्रैमिर्क ओतरे ले योगत जते गाछ कून दैत । रक्षि ओहो योगत जे गाछ कूनसँ पहिल कोनो कारणे सुधि गेन योग । प्रम उठैत जे कि ओ गाछकेँ ठाढ़ करैमे रिखासँ गाछ कूनमे ओकर त्रैम ले नगलैक । त्रैमक उचित त्रैमिक त्रैम केनिगवकेँ जखन भेटै छै तखन मनमे अंगीक अरु उठै छै अपन कर्मक कन भेटैत । बाधायोहनक मनमे एकठा नर प्रम उठै गेन । ओ ओ जे दू गोठे (माता-पिता) सँ कूट-कूट रिचाव कबय नीक छैत कि एकठा । नीक-अनता जे ह्वा द्वाद एकठा तँ तेरे कबत जे काजक गराह एक गोठे तेरे कबत । जखनि काजक जानकारी दोसबकेँ ले बहत तखनि काजक महतमे कमी-लेसी बहर कबत ।

गोसाँग दूमि गेन, द्वाद अरुव ले भेन छन । राखक सब काज सहावि कनी गर्तसँ जवन आनि छलि नग बखन । बतका भानस करैक ओवियनमे जूँकेँ सुब-साव कबय नगनी । तग रीच दिनक काजक हिसारपव मन गेननि । केन काज सब छुलै आ केन-केन भेन । ओसारेपव त्रैम हिसार जोड़क रिचाव केननि । नन्दनान ओछागलेपव सँ देखैत जे जखन भानसक ओवियन भेये बहन अछि तखन बातियो ठीके-ठाक बहत । भगवानकेँ मने-मन गोव नागि कहनखि-

“भगवान, जहिना बाति अराम करैले बनेलौ द्वाद जौ आगक ओवियन भेन बह, तखन ठीके बनेलौ । द्वाद अरुसँ पुछै छी जे रिनु पागक सबनाहियो लेखा केकरा पुछै छै ।”

नीन तँ नीले छी, खाड-शीवू निनियाँ देरीक पृजा कक । द्वाद कि ओहो भुखएन पेठकेँ पुछै आकि जोड़ क२ पड़ । जाग छै । खएव जेतय जे होड, मरिबे-मरिबे तँ सुख भोगागये जायत । अरुकून सम्य देखि बाधायोहन माथ नग आरि पुछनक-

“माथ, किछ करैक मन होगय । घरक जे दशा देखि बहन छी, ओ निचाँ दिस ठडकि बहन अछि । आग कबी-कि-कालि कबी कबय तँ हमरे पड़त । तगसँ नीक जे रचन समेकेँ ल्यास ले जाय दी ।”

लेठक रात सुनि जलिना कनीक मनमे आशिक रीखा खसत तहिना नन्दनानक मनमे । द्वाद नगले नन्दनानक मन रिसागन ह्वा नगननि । ओह, रोचवाकेँ जखन पढ़क लेव एले, भगवान लय-पएव तेछाँ घरमे त्रैम देननि । जौ अनेक जकाँ हमर पढ़ । सकतिथै तँ कि बाधायोहन रडका लोक (डाक्टर-गर्जनीयव) ले रनेत, कि ओ गठक रडका घर बना बलक ओवियन ले करैत । एते तँ दोखी लेठी नग छीले । द्वाद से केना ? जौ निराग बहिये तखन जे काजसँ देह दोबरीये तखन ले, से तँ अपना ले मन अछि जे जानि क२ कहियो काजसँ देह दोबरीले तेरे । द्वाद तेयो ओकरे दू माथ-लेठकेँ ध्याराद दिथै जे तीन सातसँ ओछागन पेने छी आ सब लेकवय करै । भगवान अहीले ले परिवार दग छुनि जे असगले लोक अपन जिनगी जानव जकाँ ले जीव सकै । जौ से योग आ असगले कियो ह्वा आ ओकर माथ मरि जाग तँ असगले रोचवा कि कबत । काज तँ तीन गोठेक छै । एक गोठे रजावसँ कलनक कपड़ । अनत, दोसव गोले जवलेक ओवियन कबत तँ तेसव गोठे कनरो कबत किल ।

बाधायोहनक प्रम सुनि नन्दनाना ओछागलेपव उठै क२ त्रैसत रजना-





“रौआ, आर कि त्रेहु कोलो नाकिछी रचा थोछ, छह जे ले किछ कएन तेतह । तू त कहुना चकनगला भ२ गेनह, जे चवि-चवि पाँच-पाँच बर्खि लेदवा सभ गाथ-महिसक चवराहि करैथ । ओते पैघ जनरक चवराहि करैरना बह छै । मैथिक पास करैमे त्रेवा कोलो भागठ छह, मवियो जखर त त्रेवा मागयेकेँ चरसी दी जे कहुना-कहुना परिवारकेँ ठाढ़ केले बहनह । आर तहुँ जूखन भेनह । नहियो कहुना त कतेको रिषयक रात पढ़नहि बेरह । आग एते सत्रेस अरुस मनमे भेन अछि जे मविते कान पुछै जोगव बहलौ आ लेठकेँ अगना जिनगीक राठ ह्य ले फेछरे । लेठ धन छी, एतेथी दुनियाँमे जिनगी ले रिताउन तेते ।”

नन्दानक रिचावस बाधामोलनक मन कबीच ले भेन जे रावू कि कहनि । द्वाद दोहवा क२ पृष्ठ, थोखर हएत । एक त ओल लागस (दर्द) पीछी त छुथि तगपव लेसी रजरिखनि से नीक ले । द्वाद अपना जनेत प्रमक उतव त दैये देनि । भनहि रूमेमे ले आथन । रूमेमे ले आथन, ज कमजोरी केकव भेन ? रजनिहाक अकि सुनिहाक । एते रात बाधामोलनक मनमे अरिते नर-प्रवानक रीचक दूरीपव नजवि गेन । नर केकवा कहरे आ प्रवान केकवा कहरे रा प्रवान कि भेन ? देखे छी जे किशोरी रावक गाछी तीन-चारि पुस्त पहिनुका नगाउन छुथि । गाछीक आठ पव जे शीशोक गाछ नगोननि, माछि भनहि ठहि क२ सरीठ किअ ले रनि गेन, द्वाद एक-दोसवाक गाछक दाय तीस-हजार, चातिस हजार होग छै । से कि कोलो शीशेक ठाक अछि आकि आयो गाछ सभ एले-एलेन अजोयो भ२ गेन अछि आ कड़ो एते करै जे परिवारमे अपूछ बलैले बह । द्वाद तैयो त एकठ प्रम उठरे कवत जे तग रीच (गाछीक जिनगी) कि गाछक डवि ले सुखले आकि शीशोक पठिया ले भेले । जकव भेले । अकासक चिड़ सभ सेहो राविक नसा ज्ञानमे नगोन आरि-आरि डविपव लेसी ज्ञान बगडा नसा नगा रावियोक गाछ रोपिते बहन । आगयो ओ गाछी ओलि नहनगएत अछि, जहिना थुक जूखनीमे नहनगएत छन । भनहि गहम साँपक नहनही ले होग पनिया दवादक त अछिये । द्वाद ओकव भय कल केकरो होग छै, होग छै गाय-घबक गहमक । जे जमीन अम शीशोक कोन रात जे चन्दन सन बसु दैत बहन अछि, तेकवा छोछी जौ कियो मकभूमिमे रसि खूनी मनरे छुथि ओ भनहि देलक मना नथि मनस ले मना सकै छुथि ।

किशोरी रावपव स बाधामोलनक नजवि अपना परिवारपव उतवन । थेत सभ सद्धित करै द्वाद पवरी भेन जाग । पवतियो कि कोलो एके कक अछि । कते उपजलेक शिजि अरिष अछि त कते शिजिक अत्रर रनाउन जाग । रिनु पानियेक थेत केते दिन अपन सेरा द२ सकत । रौद-जाडस तपैत कहुना अपन अस्तिर रना बखन अछि । द्वाद मृत प्रम एठाथ अछि जे जग समेमे ह्य सभ जीर बहन छी, समयानुसार ह्नि केना ओद्यागिक ह्नि रनत, मृत प्रम ज अछि ।

अरुबक कपमे बाधामोलनक रिचाव जे जे पूछी अछि ओगमे पशुपानन करी । द्वाद पशु त कते कक अछि । मथियो अछि रकवियो अछि । मथी त उपोदित (दूध) छी रा ले, तहिना थोछ । अछि । तए दू सरावी रनि गेन । जगथम पेठक समझा अछि ओ थोछ एस चनत ? महिस भेन त ओ मवद-मवदी भेन । अखना गाय-घबमे तीन-तीन दिन जोक रौआ-रौआ राह (पान) कवाले । तगस नीक गाथ । जे किछ थोछ-थाछ रिकास भेन ओगमे गाथक पान सेहो समायानकून भेन अछि । ततरे ले जौ गाथ-महिस गोसर त ओकव चावक (भोजन) ओवियान सेहो कव पढ़त । जे सरलक साधक रात ले अछि । जग जोगव जिनका छुछि ओ ओग जोगव काज सहारि सकै छुथि । तए भितर-भितर बाधामोलन ए भाँजमे जे जौ घासक नृवि माथकेँ हएत त एते त उपकार भेन ।

तग रीच बूनी आ नन्दानक रीच कल-कली ह्अ नगन । थिसिया क२ बूनी पति नन्दानकेँ कहि देनकि-

“रड़ बुधियाव छलौ त ओ पडरा केना कपेगयो ठकि जनक आ देहमे लागो पैसा देन ?”

बुधनीक रात नन्दानकेँ नगनि ले । पनिक थुक थुकपा कप सोया पढ़नि । तीन सातक क२ नन्दानकेँ जिनगीक बहत अत्रर कवा देले छननि । अत्रर गहो कवा देले छननि जे अत्रन उमेले कि भेन । जोक स२-स२ बर्ख जीरे ह्य अथोस कमेमे जा बहन छी । जग मती आ लेठक सेरा ह्य कविती से दिन-राति हमार पाछु हवन बह । जे हमार पाछु हवन बहत ओ अपना जे कि कवत अकि सोचत । सरलक जिनगी ह्य त्रेछी देले छि । जग चलेत परिवारक गाछी पाछु द्वाद ठवकि बहन अछि । अपन हवि कवून करैत नन्दान पनीकेँ कहनि-



“बाधामोहनक माथ, अहाँ ठीके कहलौं जे पड़ारा ठीक जनक । दोध तँ हमर भेल । पुरुष भऽ कऽ घबक खुष्टा तँ हमरी भेलै । दूदा एतेन ठेकेनिहार हमरी ठी छी आरौ लोक छै । परिवारमे एते गन्ती जकब भेल अछि दूदा... ।”

पिता दूदक गमानदारीक रौत बाधामोहनक दुदिकेँ हिलोबि देलक । रचा मन सूप जकाँ कष्टक तँ ले पैनक दूदा हिलोबिमे सरलक (नीक-अनक) सीमा जकब रना देलक । राजन-

“माथ, हम तँ बूजेल सेल छी, बाबू लेमाल छथि, तग रीट तँ कते दिन रगियाक रंगी रना दोगा पेये ।”

लेठक रात सुनि रूनी नजरजी जकाँ आँखि मूनि बहल गेगत रजन-

“रौआ, कोना कि निथ-पढ़-अढ़ जे निथि-निथि बथिते । दूदा एते मन जकब गराली दग जे जे रनि पौनक से करेत बहलौ । नीक-अनक तँ उपवरनाक छी ।”

मागक रिचावकेँ पकड़ा बाधामोहन नती जकाँ दुपद दूदकेँ उठैत छैत दूदा एतेन कोना-गोइर कि अखँ ले पकड़ा पलेत जगथाम सँ सोगब पकड़ैत । नजबि उठा देखेत तँ सद्द जकाँ मनकेँत सब किछु देखेत दूदा नहेरक गब करैत भेटैत ले करेत । गुरुक आगू जहिना शिव सिब-सिब जालेक प्रथ प्रदेत तलिना बाधामोहन प्रुतनखि-

“माथ, किछु तँ कबिछा कऽ कह ?”

बाधामोहनक प्रथक कावक अपन बह दूदा रूनी अपना कावकेँ रूनि राजनि-

“रौआ अनकब घब-दुआब छी जे राजर, अपन छी, अपन केलौं, तगले त्रेवा सभकेँ उपवाग देर नीक लहत ? अपन पति, लेठा, समाज, देश-दुनियाँ सब किछु तँ अपने छी तखन कि कियो ईस अतग भऽ करैत जे दोसराकेँ कहत । जग करैत धवतीपब एलौं, जहाँ धबि सक नागत तहाँ धबि करै छी । नीक-अनक देखिनिहार कियो आरौ छथि, तखन कि कबरह ।”

मागक रात सुनि बाधामोहनक मनमे उठल, ओह गड़रड भऽ गेल । तेनेन नाब-साढ़मे पड़ा गेलौं जे अपन राठे रठिया गेल । भविष्यो दिन जौं राठ तकेत बहर तैयो ई डगबमे थोड़ डगबि सकर । से ले तँ ठिकिया कऽ रए प्रथ बाथी जगथाम रौआगले रठेरी किछु-ले-किछु कानक जन अँकेत अछि । राजन-

“माथ, अपन दू गोठे -बाबू आ अदू- रिर्तमान छी, तँ एतेन बाढा देखा दिअ जग पकड़ा हमदू तामबि छलेत बहर जोषबि ओस नीक आ सकत बढा ले भेटे जयत । अखि सौमनमे यदक सकप सरलक माथ-रापक गछा बहत तँ... ?”

बाधामोहनक प्रथ जहिना पिता-नन्दन-केँ तलिना माथ-रूनी-केँ आरौ भूसिया देलकनि । नन्दनक मनमे उठैत जे जौं लेठा उठि जिनगी उठरए छै, तगमे लय कल छुटि जाग छी, जे रापक सेरा ले कबत, किछु करैक मन गेग छै, किछु माले की ? सब किछु अकि किछु ले । दूदा किछु रिचाव जौं लेठकेँ ले देर, सेरो रीक नगले मबर । मनक रात कहि दग छै । राजन- “रौआ, दुनियाँमे कियो ले अपना ले करैत आ ले अनका ले, हथियाव रनि धवतीपब आन अछि, ओक उपयोग कते के केनक ओकर लेखा-जोखा धर्मराजक घब गेग छै । कियो धर्मराजक घब रास करैत कियो यमराजक । लेठा रनि धवतीपब जनम जनह तँ केना कहरह मबदक लेठा दूदा एते तँ कहल कबरह जे मबद रनि मबदक लेठा कहलैत बली ।”

पिताक रात बाधामोहनक मनकेँ ओहन रना देलक जेहेन रकबीक काँट दूधमे साबेक दू देना पछाति नगले दली रनि जागत । मन-मन बाधामोहन टोकना गेगत टाक दिस तक नगन । गुमा-गुमी देखि रूनी अगतागत राजनि-



“रौआ, भानसक अरब भऽ जायत । तह्ये पय-पानिक ओवियान तँ अपना सभसँ कूठे करए पड़ैए । केना  
रापकेँ पछुआ-मोव पयमे दिअनि । तखन त्रेछ रड़ जिद नगन छुह तँ याए भऽ कऽ कि कहलह । यएह ले  
हाथ-पएव भगरान दुकस देले बल्ख जे दनदनागत आगू झूठे दोहोत जेरह ।”

कहि सपष्टन उठि भानस करए छुनि दिस रहनी ।



३

बातिक पौले नख रजैत । गायक शिरानयोक आ ठकुरबराड़ा योक सँभूक शिथ आ डमडूँ ओ राजि गेल । जावन नीक बहने रूनीक भनसो आन दिनसँ किछ पहिले भऽ गेलनि । दूदा तँ ए कि गायक देवानयक धूप-आवतीसँ पहिले लोक थाय केना जेत ? आ जौं थागये जेत तँ कि भऽ जयत । ई रिचावये छलिये नग रैस खोसनाक जवाहन दूद दिससँ छलिये आगू निख नगली । निखन-पढ़न तँ रूनीकेँ ले गेगत दूदा सब दिनक आवतीक स्तुति सुनि पढ़-ग्रंथैक नृषि तँ भगये गेल छननि । कियो अपन अक्षर चित्रे थिच बनाओत तगसँ अनका की । तग रीच ठकुरबराड़ाक स्तुति थक भेल- “ भये प्रगष्ट किवपाना दीन दयाना... । ”

ओना रूनी सब दिन स्तुति सुनैत, दूदा थोका हाथये बहने छलिये आगू निथो नगली । स्तुति करै रतिआगत, रूनीक कान करै सुनैत आ हाथक थोसनी करै छलैत । एक राठ ले बहिये धाक धावा जकाँ अपना-अपनीकेँ सब दौलैत । स्तुति समाप्त गेगते जना रिजनीरना गजन रिजनी नागन कलैले जे जतए गेल बहन ओ ओते कति जागत तहिना रूनीक भेल । दूनु हाथो-कानो अपन कति गेल । ककिते मन ओना नगननि । दूदा आगूये भानसक रतिनखा थागक समय तँ मन परिवार दिस समष्टी कऽ गेवा गेलनि । मन पढ़ननि बाधायोलनक प्रथ । ओह, रेटावाकेँ कल किछ उतव देनिथ । कल्ला तँ माए-राप अपन हथी ले छिथ, सोने अखिरवाद देले थोड़ गेग छै आ अखिरवादी सेहो दिख पढ़ छै । अपसोच करैत मन ठमकननि । ठमकिते उठननि जे ले किछ रितगा कऽ कहनिथ तँ मनाहियो तँ नहियो किछ केनिथ । एतरे कानये भूमकयो तँ नहियो भऽ गेल जे उन्ठन भऽ गेल । कि भेलै, थागये कान रौआकेँ रूम-रूम कहलै ।

नख रजिते रूनी पतिकेँ भोजन करौननि । पछाति रूनी अपना आ बाधायोलनो थागल रैसन । दूदक अन्न दूदमे रूनीकेँ घुबिआगते बहनि कि मनये अपन जिनगी मन पढ़ननि । कतए जनम भेल, माए-राप एठांय कते दिन बहलौ, पछाति दूनु गेल नर लोककेँ पति बना हाथ पकड़ । देननि । पतिक सग जिनगी भविक शिर्ष छन, से भगरान कनटपन केननि । जे अपन देखेरना छनाह तिनके तना कऽ मछोड़ा देनकनि जे देखनिहावकेँ सुय देखनिहावक आशि भऽ गेलनि । दूदा तँ ए कि दासए जीवन ले बहन । मागयो-राप आ साँडसो-सम्बक गछा तँ पुवागये देनिथनि । आर कि बाधायोलन रचा अछि । ओ कि घबक मोठवी उठा ले छनि सकैथ । जहिना पतिक आशि तहिना ले रेटैक । राजनि-

“रौआ, तखन केना धुकधुक सोम अपन रिचाव कहितिथ । कल्ला भेला तँ स्वाधिये भेला किले । जाले आधि तके छथि ताले आधि उठाएर नीक छत । तँ तखन किछ ले कहनिथह । ”

जिह्वासा भवन मागक रात सुनि बाधायोलन छित अस्थिव करैत राजन-

“कोन रात माए, रिसनि गेलौ । ”

दूद-कान चमका जलिना माए रचाकेँ चमकर सिखलैत अछि तलिना रूनी दूद चमकलैत राजनि-

“बेदुँ बाल-बोध जकाँ रूधिरिसक छह । आर शीगव-पुतगव गेगये राँकी छह । ”

बिनु नारिकक नार जलिना वीनमे हरा सग अपने मिनहोबि खेतागत तलिना रूनीक मन सेहो खेतए नगननि । रिसित गेगत माएकेँ देखि बाधायोलन राजन-



“माध, तते ले कहे छै जे एकेछा मन बहत । सभछा रिसरियेरना कहे छै । कोन रात तखनका कहै नगलें से ले कह ?”

बाधामोहनक प्रश्न सुनि रूनी राजनि-

“रौआ, तखन जे कहल छेल जे किछ करैक मन होगए । से करैसँ मनाही कवरह । रड़ कवरह तँ अपन कएत सुना देरह ।”

मागक रातमे बाधामोहनकेँ अशिक अरुबक सभारना बूमि पड़ल । पियासन रठैरि जकाँ मागक अ गू बाधामोहन चुपचाप भऽ गेल ।

रूनी राजनि-

“रौआ, जुग-जमाना तेलन आरि गेल जे... ?” कहि रूनी चुप भऽ गेली । मागक रात सुनिते बाधामोहनक मनमे उठल जे लेब दोसब रात भविसक मन पड़ि गेलनि । ओना ले छेत, अपन कएत काजक रड़ गि सभकेँ नीक नहो छै, तँए प्रश्नकेँ सोमबा कऽ बाखर नीक छेत । राजन-

“माध, एतेन कोना काज कह जे खूनी मनसँ कएत हो ?”

बाधामोहनक प्रश्न सुनि रूनी ठरुएनी । ठाव पठपठैनी-

“केकवा खूनी कहर आ केकवा ले कहर । एके काज केकरो निध खूनीक होगत केकरो निध नाखूनीक होगत । भनस कलेक नूनि माध सिथोनक केना अरना भेल । दूदा ओकब जकबति तँ लेछोकेँ होग छै, बाधामोहन तँ लेछो छी । भाए-बारू गाए गेसि छनाह । गिरहत तँ नमहब नहिये छना दूदा सूर्यरणी दिनीपक राठ जकब पकड़ल छना । गाए तँ देशिये गेसि छनाह दूदा जेहल गाएक बग-कप तेहल दूधो छलेक । रजैत-रजैत जेना भक खूजनि । दूह थोनि रजनी

“रौआ, तद्व जमानामे बारूक खूजपव तेहन-तेहन गाए बहे छनि, जेहल-जेहल अखलो छनि ।”

कहि रूनी चुप भऽ गेली । जेना किछ मन पड़नि । दूदा तूक ले रिसिले ठमकि गेली । रूनीकेँ चुप देखि बाधामोहन राजन-

“माध, गाएकेँ की सभ करै छेली ?”

अपन काजक चर्च सुनि रूनीक वृत्ति चित जगतनि । जहिना कोठीक निचाँ दूहते खूजिते अन भुजिआ नहो छै तहिना रूनीक जिनगीक दूहते खूजिते भुजिआ-

“रौआ, माध-रापक घब रड़ सुख केनिह, जेतरो उमेव धरि सुख केनिह तेतरो त्रेवा कहाँ देल भेल । तखन तँ अलव गाएक धरम बखराव । मागये-रापक धर्ये अखलो ठाढ़ छी ।”

रूनीकेँ लेब धारमे भसिआगत देखि बाधामोहन जानक जौड़ लेक राजन-

“माध, सएह ले प्रुछे छिओ जे माध-राप कोन धरम देलखन जे अखलो ठाढ़ छै ?”

अपनाकेँ हिलोरेत रूनी रजनी-

“रौआ, रिआह होगसँ पहिले मागयक सग भनसो-भात सिखलौ, थेतियो-पयावीक काज सिखरो केलौ आ कवरौ करै छलौ । मान-जानक घास-भूसा सेहो करै छलौ । एठाम तँ ओ काजे रिसवि गेलौ ।”



बाधामोलन- “एँठाम (नेहब-सँ-साम्ब) कि सभ सीखनीही ?”

बाधामोलनक प्रश्न सुनि रूनी नज्म नगनी । मनमे उठै नगननि जे केना लेखै कहै जे लोखा स्त्रीगणो भऽ कऽ कोदवि पाड़र, धन रोपर एतग सीखनी । कि कहत ? ओना, करैत तँ देखै करै द्वाद नेहबसँ साम्बके केना दुसि देर । कल्ना भेन तँ (नेहब) पराये घर भेन किल ।

माएके तत्-यत् करैत देखि बाधामोलन प्रहृतक-

“माए, गागयक की सभ करै छैने ?”

रूनी- “मागयक सगे घासो खै छैने, कष्टियो कष्टै छैने । गोरब-हठैनाग, खगब खडबनाग, खेनाग-पीनाग देनाग सभ करै छैने ।”

बाधामोलन- “गाएके दूहरो करै छैने ।”

दूह सुनि रूनी चमकि राजनि-

“से कि भए-राप ले छन जे दूहरे । कतए-कहाँ सुनि छी जे पजारमे योगियो गाए दूह ।”

बाधामोलन- “जखन गाए गेसिक नृवि त्रेवा छै, तखन खूँपापव गाए कहियो कहाँ देखनि । नाना-नानी नग देन छैनख ?”

बाधामोलनक प्रश्न सुनि रूनीक मन नाचि उठन । आग जौ खूँपापव गाए बहैत तँ यएह दिन-दुनियाँ बहैत । भगरनके मज्जुब ले भेननि । जेहो छन सेहो हेरि जेननि । राजनि-

“लोखा, रिखाहमे तेलन गाए राप-माए देनक जे ओकरा जवहके सहावि ले परित्रे, द्वाद दैरक डाँग नागि गेन ।”

बाधामोलन- “कि दैरक डाँग नगनी ?”

रूनी- “पहिलो गाए, रछा तरे रावू देन बरहि । जाले नगैत बहन दू-दही परिवारमे चलेत बहन, द्वाद दोसब रेव जखन गाए उठन तखन तेलन खूँपा सँदक भाँजमे पछा गेन जे गागयक ठाँगे छै गेन ।”

बाधामोलन- “जखन ठाँगे छै गेलो तँ ओकरा डकठबसँ ले देखोनेही ?”

रूनी- लोखा, लोक सभ कहनक जे रनियाविमे एकठा नती गेग छै, उ खनि कऽ राहि दिओ । छुटि जेतग । सएह केलेो द्वाद ले सभवन गाए । खूँटे उसवि गेन ।”

बाधामोलन- “माए, मन गेग जे गागये गेसिरे ?”

रिखित गेगत रूनी-

“लोखा, अपना परिवारमे गाए कहाँ पाड़ै ।”

बाधामोलन- “माए, लेव दोहवा कऽ गाए ले भेलो ?”

पडकड १ कऽ रूनी राजनि-



“रौआ, जग काजमे थोष्टक नगि गेन से केना करिबै ? ”

धड़कड़ १ क२ राजि त गेली, द्वाद मनमे उठननि जे दोहरा क२ कबला त ले केला। कबला केना करिबै ? सोमा-सोमा दू तबलक रिचाव मनमे दू दिससँ ठाठ भ२ गेलनि । रीचमे ठाठ रूनी छैपछै नगनी । रूनीक छैपछैगत नजबि देखि बाधामोलन प्रश्नकेँ मोड़ेत राजन-

“एके लेव एले रिचाव किअ भेलौ जे खूँका नगि गेन त दोहरा क२ ले गोसर । लेठा प्रश्नक निकतव लेगत रूनी राजनि-

“से कि अपने दू पबनीक रिचाव भेल आ कि... ? ”

बाधामोलन- “की, आ कि ? ”

रूनी- “रौआ, अपना त देखन बल जे लेहव खली पबसादे गाममे ओहन परिवारक कपमे अछि जे अपन परिवारक गाड़ ी भोजन, रस, आरामक संग दरागयो-दाक आ पठागयो-निखाग) दमनागत छै । योका-रुयोका दोसरोकेँ उपकार लेग छै । द्वाद... । द्वागतक पछातियो ले उतबन अपना चितसँ । द्वाद अपने (पति) द्वायारि जननि । एकठाम मनमे रोपि जननि जे आर नहियेँ गोसर । ”

बाधामोलन- “राबू द्वाह मोड़ ी जनख त दोसब-तेसब नगरा क२ किअ ले कहलौनल ? ”

जहिना पकान धावमे छैपेकान करै-करै हवाएन टिकनि माछि भैठ जागत जगसँ किछु रिनमेक आशि जगैत तहिना जेवसँ छैलैत रूनी रजनी-

“रौआ, एक द्वाहकेँ के कह जे सागयो द्वाह लोक देलक । ”

मागयक स्पष्ट रिचाव बाधामोलन ले बूनि सकन । मनमे लेहव नगलै जे ओ सध द्वाह कतएसँ आरि गेल । राजन-

“ग ले बूनिछै जे सध द्वाह... । ”

जहिना थकन भेला पछाति नाकक संग द्वाहसँ साँस लेना उतब नगलै थकन छै जागत तहिना रूनीयोकेँ भेलनि । बाधामोलनक प्रश्न समाप्ता ले भेल छननि तग रिचमे छैप-छैप रूनीक मन छर नगननि-

“रौआ, एक त अपन (पतिक) रिचाव बल कबनि तगपब एकोवती सह पारि जायि त आरा मन सकता जागन । जखन मन सकतागन आकि निमसकि क२ कहैत छनाह जे आर गाए ले गोसर । ”

बाधामोलन- “केकब सह पलैत छनाह ? ”

रूनी- “अड़ सिया-पड़ सियाकेँ के कह जे समाजोक लोक कहनि जे त्रेवा खुँपब गाए ले धाड़ छै, खलेर कोन लेहवे पड़ छै छै । ”

बाधामोलन- “जेकरा खुँपब गाए छै तैकरासँ ले पछैत छैनकि । किअक त हुँका एले तीत-मीठ यठेनासँ भैठै त भेलै छैननि । ”

रूनी- “से कि सगे जाग छलौ जे देखिछै । ह एक दिनक सोमलक रात कह छिअ । एकठा पडा अएन । ओकरा जेना कियो कहि देल लेग तहिना दवरज्जापब अरिजे अपने कूड़ले बज नगन जे ए डीहपब शलक छैग भ२ गेल अछि । सम्पतिक फय छैत । सम्पतिक फय बुनि आँखि ठरठरा गेल । केना जीर । जखन पेछै ले भवत त भुखल केत दिन जीर । केना रान-रचा छैत आ केना पतिपान छैत ? अपने त ठरकन





आँखि लोबकेँ, बलौठिन पेपबसँ सोखरो करैत बही दूदा लूका (पति) ले सफ़ा बहननि । दहो-बहो लोब गानपब देले छँयनि-छँयनि निचाँ खसए नगननि... । ”

बजैत-बजैत बूनीक आँखि सेहो लोबो गेननि । रौनी भवभवागत देखि ख्यासए नगनी । बाधायोलनक आँखिमे सेहो लोब आरि गेन । दूदा आँखि अलूकणी बहिले सुषमाएन छन । जहिना दर्दक निरावण सुषम पानि करैए तहिना परिवारक दर्दक निरावण बाधायोलनक मनमे जगननि । मने-मन बाधायोलनकेँ सकप उठैले जे जीरलोपयोगी कोनो काजक जेँ सराँगन नूबि भ२ जए तँ ओही काजक सम्पादन परिवारक अंग बनैत छै तँए... ?

बाधायोलनकेँ छप देखि बूनी आँचबसँ आँखि गोठि राजनि-

“रौआ, गागयक सग पगहो गेन । पडारा ठकिये क२ न२ गेन । ”

बूनीक छँटैत मन देखि बाधायोलन राजन-

“गामक लोक सबकेँ किअ ले खंझपब गाए छुहि ? ”

अपनाकेँ पुठै जोकब पारि बूनीक मनमे खूँशी आएन । जहिना हविदुनियाँक पबले पछेबी छेतारबक छँटि दैत तहिना बूनी छँटि देननि-

“रौआ, रड-रड नीना छै । कते कहरह । एक-दोब की ले कि सकाबकेँ कूड-ले, गामे-गाम रड-का जवसी साँठ- देनकेँ । सेहेतु लोक पान खूँखरए नगन, किछु तँ जकब सुतबले दूदा रौसी गागयक डाँड-छँटि छै । जगसँ उपछँटियाँ नागि गेन । ”

रातक बस पलैत बाधायोलन राजन-

“की कहनिही रड-रड नीना... ? ”

बूनी- “सबूआ साँठ- तेलेन भ२ गेन जे गाए सब रकड-ी भ२ गेन । गवीर गेसिनादबकेँ तेलेन गबदनिकछी भेन जे गेसनागये छोट-ि देनक । ”

ई कनासब अपन यतब [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाउ ।

### बछा लोकनि दूब सवणीय श्लोक

प्रथातः कान ब्रह्मद्वैत (सूर्योदयक एक घण्टा पहिले) सरप्रथम अपन दूनु हाथ देखराक छली, आ जे श्लोक बजराक छली ।





कवाङ्गे रसते तस्मिन्: कवमया सबस्यती ।

कवमूले स्थिते ज्ञाने प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ तस्मिन् रसते छथि, कवक मध्यामे सबस्यती, कवक मूनमे ज्ञाने स्थित छथि । भोवमे ताहि दूले कवक दर्शन कवराक थीक ।

२. स्या कान दीप जसराक कान-

दीपमूले स्थिते ज्ञाने दीपमया जनार्दनः ।

दीपाङ्गे शिखरः प्राकृतः स्याज्जातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मून भागमे ज्ञाने, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (शिखर) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे स्याज्जाति । अगकै नमस्कार ।

३. सुतराक कान-

बाय अन्द तनूमन्तु नैतेय वृकोदवम् ।

शियले यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नथति ॥

जे सभ दिन सुतरासँ पहिले बाय, क्रमावस्त्रायी, तनूमान, गकड आऽ भीमक स्वरण करैत छथि, तनकव दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छहि ।

४. नहैराक समय-

गङ्गा च यद्गले टेर गोदावरि सबस्यति ।

नर्मदे सिन्धु कारेवि जलेऽग्निं सन्निधिं कुरु ॥

हे गङ्गा, यद्गना, गोदावरि, सबस्यती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कारेवि पाव । एहि जनमे अपन साक्षि दिय ।

५. उतव यसेन्द्रस्तु हिमाद्रेश्चर दक्षिणम् ।

रश्मि तत् भावत नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सन्द्रस्तु उतवमे आऽ हिमानयक दक्षिणमे भावत अछि आऽ ओतका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

६. अहना दीपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना स्मरेन्नितं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, दीपदी, सीता, तारा आऽ मन्दादरी, एहि पाँच साक्षी-स्त्रीक स्वरण करैत छथि, तनकव सभ पाप नष्ट भऽ जागत छहि ।

७. अग्निधामा वनिरासो तनूमाष्ट विभीषणः ।



रूपः पवश्रवामश्च ससुते टिबश्रीरिनः ॥

अश्रुशोभा, रति, रास, लन्यान्, रितीश, रूपार्थ आः पवश्रवाम- जा सात ठी टिबश्रीरी कहलैत छथि ।

+साते भरत सुधीता देरी शिखर रासिनी

उपेन तपसा लक्ष्मी यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः सन्ना सतामस्तु प्रसादास्तु भूर्जैः

जालरीलनलेखेन यशुनि शिखिः कना ॥

९. राजोऽहं जगदानन्द न मे राना सबल्लती ।

अश्रुशो पचमे रमे रणियामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मनेश्वर यजुर्देद अग्राय २२, मत्र २२)

आ अरुन्निवस्तु प्रजापतिवन्द्यः । निभोकता देवताः । स्वर्वाङ्कृतिश्रुतः । यद्वजः स्वः ॥

आ अरुन्निवस्तु प्रजापतिवन्द्यः जायताया वाङ्मते वाङ्मतेः श्रुतं गमरातिराष्ट्री मन्त्रवत्ता जायता दोग्ध्री पेश्वरीतान्दरनायः सतिः प्रवर्द्धिगोरा जिह्व वंशेष्टाः सन्त्रयो हरास्तु यजमानस्तु रीरा जायता निकाये-निकाये नः पृज्या रमत्तु कनरता न्त्रोमन्त्रयः पचात्र योगेष्टयो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सत्तु पूर्णः सत्तु मलावताः । शिव्या रूक्षिनाशोऽस्तु मित्राणाद्वयस्तु ।

३ दीयश्रुतिर । ३ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अपन देशमे सुयोग्य आ सर्वज्ञ रिद्यार्थी उपेन होथि, आ श्रुते नशि कएनिगत सनिक उपेन होथि । अपन देशक गाय श्रुत दूष दय रानी, रवद भार रलन कवथमे सक्षम होथि आ घोडा । ब्रवित कपे दोगय रना होथि । स्त्रीगण नगरक लेख कवथमे सक्षम होथि आ श्रुत सभाये ओजपूर्ण भाषण देरयरना आ लेख देरथमे सक्षम होथि । अपन देशमे जखन आरथक होय रम होथि आ ओमरि-वृष्टी सर्वदा परिपक्व होगत बल । एर एमे सत्तु तवहे हमरा सत्तु कना होथि । शिव रूक्षि नशि होथि आ मित्रक उदय होथि ॥

मन्त्रके कोन रत्तु गच्छा कवराक चाली तकर रनि एहि मत्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकनुपमानङ्काव अछि ।

अनुय-

अरुन्निव - रिद्य आदि गणसं परिपूर्ण अरु

वाङ्मते - देशमे

अरुन्निव-अरु रिद्यक तेजस हकत्तु





योगेष्मो-अनन्त नन्त करेराक हेतु कएन गेल योगक बक्सा

नः-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिकिन्धक अनुवाद- हे छँष, हमर बाजामे छँष नीक धार्मिक क्रिया रना, बाजन्त-रीव,तीवदज, दूध दए रानी गाय, दोगय रना जहु, उग्रमी नारी होथि । पार्जन्य आरथकता पढना पब रर्मा देथि, कन देव रना गाहु पाकए, हम सभ सपति अर्जित/सबकित करी ।

## 8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

### 8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words- GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comments to [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)

बिदेह नूतन अक भाषापाक बचनानखन-

गण्णिकोम-मैथिली- / मैथिलीकोम-गण्णिकोम- प्रोजेक्टकेँ आगु रह ाहु, अपन सुमार आ योगदान अ-मेन द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाहु ।

१.भावत आ संपादक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाउन मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

१.संपादन आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाउन मानक शैली

१.१ संपादक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाउन मानक उच्चारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. बाबुराव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सझ नः निरधारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार. पञ्चमाक्षरानुसारत ७, ए, ण, न एर म अरित अछि । संस्कृत भाषाक अनुस्वार शिष्टक अनुसमे जाति रज्जक अक्षर बहत अछि ओही रज्जक पञ्चमाक्षर अरित अछि । जेना-



अक्षर (क) रञ्जक बहुराक कावशे अन्तुमे ३ अक्षर अछि । )

पञ्च (च) रञ्जक बहुराक कावशे अन्तुमे ५ अक्षर अछि । )

अष्ट (ठ) रञ्जक बहुराक कावशे अन्तुमे ७ अक्षर अछि । )

सन्नि (त) रञ्जक बहुराक कावशे अन्तुमे ९ अक्षर अछि । )

अष्ट (प) रञ्जक बहुराक कावशे अन्तुमे ९ अक्षर अछि । )

उपराज रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमासक रदनामे अधिकारी जगहपव अनुयायक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक्ष, पञ्च, अष्ट, सन्नि, अष्ट आदि । राकवशरिद पञ्चित गोरिन्द माक कहर छनि जे करञ्च, चरञ्च आ ठरञ्चसँ पूर अनुयाय निखन जाय तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पूर पञ्चमासक लेखन जाय । जेना- अक्ष, चटन, अष्ट, अष्ट तथा कम्पन । द्वाद हिन्दिक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अष्ट आ कम्पनक जगहपव सेहो अक्ष आ कम्पन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछ सुविधाजनक अरथ छैक । किछक तँ एहिमे समय आ स्थानक रचत गेगत छैक । द्वाद कत्रेक लेब हस्तलेखन रा द्वादमे अनुयायक छेष्ट सन रिन्द स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ गेगत सेहो देखन जागत अछि । अनुयायक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरा देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परञ्च धरि पञ्चमासक प्रयोग कवर उचित अछि । यसँ न२ क२ छ धरिक अक्षक सञ्च अनुयायक प्रयोग कवरामे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागछ ।

१.८ अक्षर : एक उच्चारण 'व' ह'जकाँ गेगत अछि । अतः जतः 'व' ह'क उच्चारण हो ओतः मात्र ठ निखन जाय । आन ठाम खाली ठ निखन जेकराक चाली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेड्वा, ठम्मी, ठेवी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = पङ्क, गङ्क, गठर, मठर, बूठरा, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपराज शिष्ट, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट, गेगत अछि जे साधारणतया शिष्टक श्रुतमे ठ आ मध्य तथा अन्तुमे ठ अन्तैत अछि । एतदर्थ नियम ड आ डक सम्बन्ध सेहो लागू गेगत अछि ।

२.२ अक्षर : मैथिलीमे 'र'क उच्चारण र कएन जागत अछि, द्वाद ओकरा र कएने नहि निखन जेकराक चाली । जेना- उच्चारण : ऐरनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिङ्ग, रशि, रन्दना आदि । एहि सबक स्थानपव फेरिः ऐरनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिङ्ग, रशि, रन्दना निखराक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओरनि, ओजह आदि ।

३.४ अक्षर : कतहु-कतहु 'य'क उच्चारण 'ज'जकाँ करैत देखन जागत अछि, द्वाद ओकरा ज नहि निखराक चाली । उच्चारणमे यङ्क, जदि, जदना, जूङ्क, जारत, जोगी, जदु, जय आदि कहर जेकरा शिष्ट, सबकेँ फेरिः यङ्क, यदि, यदना, यङ्क, यारत, योगी, यदु, यय निखराक चाली ।

३.५ अक्षर : मैथिलीक रत्नीमे ए आ य दू निखन जागत अछि ।

प्राचीन रत्नी- कएन, जाय, गेयत, माय, भाय, गाय आदि ।

नरीन रत्नी- कयन, जाय, गेयत, माय, भाय, गाय आदि ।



सामान्यतया शिष्टक शुक्रमे ए मात अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एलन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यलन आदिक प्रयोग नहि कबरक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक अवस्थामे “ए”केँ य कहि उचारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्भर्मे प्राचीन पश्चिमिक अनुसर्षण कवर उपहाङ्ग यानि एहि पृष्ठकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दूक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रात नहि अछि । आ मैथिलीक सरसभावणक उचारण-शैली यक अपेक्षा एस रैसी निकट छैक । “यस क२ कएन, हएर आदि कतिपय शिष्टकेँ कैल, हएर आदि कपमे कतह्-कतह् निखन जएर सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

७. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो रातपर रन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हूकहि, अपनहू, ओकवहू, तकोनहि, छोहूहि, आनहू आदि । हूदा आधुनिक लेखनमे तिक स्थानपर एकाव एर हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हूकै, अपनो, तकोन, छोहू, आनो आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अप्रकशितः यक उचारण थ गेलगत अछि । जेना- यड्यन्त (थड्यन्त), योडशी (थोडशी), यष्टकोण (थष्टकोण), यृषेथी (यृथेथी), सन्त्राय (सन्त्राय) आदि ।

+. प्रनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टसँ प्रनि-लोप भ२ जागत अछि:

(क) फ्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य रा ए वृष् भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उचारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोप-सूचक टिल रा रिकारी (१ / २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेल, उठए (उठय) पडतरेक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेल, उठ पडतरेक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेल, उठ२ पडतरेक ।

(ख) पूर्वकानिक प्लुत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृष् भ२ जागछ, हूदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेल, पठाय (ए) देर, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेल, पठा देर, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय एक उचारण फ्रियापद, सङ्ग, ओ विशेषण तनूमे वृष् भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि यानिनि छनि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसव यानिनि छनि गेल ।

(घ) वर्तमान प्लुत अन्तिम त वृष् भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गलैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गलै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरसन एक, उक, एक तथा लिकमे वृष् भ२ जागत अछि । जेना-



पूर्ण कप: छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक, गेगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छियो, छली, छो, छै, अरिते, गेग ।

(च) फियापदीय प्रत्यय ह, ह् तथा ल्कारक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनह्, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहनो, गेन२, नग, नहि, ले ।

९. प्रनि स्थानांतरण : कोना-कोना स्रव-प्रनि अपना जगहसँ छटि क२ दोसर ठाम चलि जागत अछि । खास क२ अस्त्र ग आ डक सग्रकमे ग रात नागू गेगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेन शिछक मया रा अत्रुमे जू अस्त्र ग रा उ आरग त ओकव प्रनि स्थानांतरित भ२ एक अकव आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि ( दागन), माष्टि (यागष्ट), काछ (काउछ), मासु (माउस) आदि । दूदा तसेम शिछ, सभमे ग निश्चय नागू नहि गेगत अछि । जेना- बगिाकेँ बगया आ सुवागुकेँ सुवाउस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. लननु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया लननु ( )क आरथकता नहि गेगत अछि । कावण जे शिछक अत्रुमे अ उचावण नहि गेगत अछि । दूदा सकृत् भासाँ जल्लिक तल्लि मैथिलीमे अएन (तसेम) शिछ, सभमे लननु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि गेथीमे सामान्यतया सपूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा सग्रकी निश्चय अनुसाव लननुविर्लन बाखन गेन अछि । दूदा बाकव सग्रकी प्रयोजनक लेन अत्रुथक स्थानपव कतह्-कतह् लननु देन गेन अछि । प्रसुत गेथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दू शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्ण-रिग्रास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रचतक स्रगहि लनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन गेहऱरना हिसारसँ र्ण-रिग्रास मिलाउन गेन अछि । रर्तमान समयमे मैथिली माहभाषी पर्यवृत्तेँ अन भाषाक माधमसँ मैथिलीक ज्ञान लेर२ पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मून रिशेषता सभ कृष्टि नहि गेगक, ताद्व दिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादरक कहल छनि जे सबनतक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किन्नह ले आर२ देरक चाली जे भाषाक रिशेषता छल्लि पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ स्रग न२ निधरित)

## १.२. मैथिली अकादमी, गठना द्वारा निधरित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राम

एखन

ठाग

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राम

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव



तिनकर । (रैकपिक कर्पे ग्राम)  
 ँहु, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकपिकतया अपनाउन जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन । जा बहन अहि, जाय बहन अहि, जा३ बहन अहि । कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कव३ गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' प्रतिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत अहि यथा कहनि रा कहनिह ।

४. 'ँ' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत सम्प्रुतः 'अ' तथा 'अ' सदृश उच्चारण गच्छे । यथा- देखैत, छलैक, लोख, छैक गलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट एहि कपे प्रयुक्त होयत: जेह, सेह, गएह, ओह, जेह तथा देह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'ग' के वृत्त कवर सामान्यतः अग्राम थिक । यथा- ग्राम देखि अरह, मानिनि गेन (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्मृतत अत्र 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्पे 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा- कयन रा कयन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जा३ गलादि ।

८. उच्चारणमे दृ श्रवक रीट जे 'य' प्रनि स्मृतः अरि जागत अहि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्पे देन जाय । यथा- धीखा, अठैखा, रिखाह, रा धीया, अठैया, रियाह ।

९. सामान्यतः स्मृतत श्रवक स्थान यथासंभव 'अ' निखन जाय रा सामान्यतः स्मृत । यथा- मैअण, कनिअण, किवतनिअण रा मैअँ, कनिअँ, किवतनिअँ ।

१०. कावकक रिभक्तिउक निम्नलिखित कप ग्राम:- तयकै, तयसँ, तयसँ, तयक, तयमे । 'मे' मे अनुस्वार सरूया राज थिक । 'क' क रैकपिक कप 'केव' बाखन जा सकैत अहि ।

११. पृथक्ताक रिवापदक बाद 'क' रा 'क' अत्रय रैकपिक कर्पे नगाउन जा सकैत अहि । यथा- देखि कय रा देखि कय ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि निखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'य' क रदना अनुस्वार नहि निखन जाय, किंतु छापक सुविधार्थ अर्द्ध 'उ' , 'ए', तथा 'ण' क रदना अनुस्वारो निखन जा सकैत अहि । यथा- अर्द्ध, रा अर्द्ध, अर्द्धन रा अर्द्धन, कर्ठ रा कर्ठ ।

१४. हतत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिउक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा- लीमान, किंतु लीमानक ।

१५. सब एकन कावक छि शिष्टमे सँ क' निखन जाय, तँ क' नहि, सहाज रिभक्तिउक हेतु कवाक निखन जाय, यथा यव पक ।

१६. अनुनासिककेँ छन्दरिन्द द्वारा राज कयन जाय । पर्वत छन्दरिन्द सुविधार्थ हि समान जठिन मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग छन्दरिन्दक रदना कयन जा सकैत अहि । यथा- हि केव रदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पासीस ( । ) सृष्टित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा लक्षणसँ जोडि क' , तँ क' नहि ।

१९. निश्च तथा दिश्च शिष्टमे रिवायी (२) नहि नगाउन जाय ।







झुदा कथना कान बह्य आ बह्य मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग कबराक अग्रस बह्य  
ओकरा । प्रहृतापव पता नागत जे टूनटून नाम्ना आ ड्रागरव कनाठे धसक पार्किंगमे काज करैत बह्य ।

छले, छल्य मे सेहो ई तबलक भेल । छल्य क उचारण छन-ए सेहो ।

सयोगने- (उचारण सजोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कर, पद्यमे क२ सकै छी । )

क (जेना वामक)

-बसक आ सगे (उचारण वस के / वाम क२ सेहो)

स- स२ (उचारण)

चन्द्रिन्द आ अनुयाव- अनुयावमे कठ धविक प्रयोग भोगत अछि झुदा चन्द्रिन्दमे ले । चन्द्रिन्दमे कलक एकाक  
सेहो उचारण भोगत अछि- जेना वामस- (उचारण वाम स२) वामके- (उचारण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामके भेल हिन्द्रीक को (वाम को)- वाम को= वामके

क जेना वामक भेल हिन्द्रीक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्द्रीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

स भेल हिन्द्रीक से (वाम से) वाम से= वामस

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते तक गेह, सरलक प्रयोग अराठित ।

के दोसर अर्थे प्रयुज भ२ सकै- जेना, के कलक ? रिभजि “क”क रदना एकव प्रयोग अराठित ।

नहि, नहि, ले, नग, नँग, नग, नग ई सबक उचारण आ लेखन - ले

ओर क रदनामे र जेना महूरपूरी (महूरपूरी ले) जतय अर्थ रदनि जाय ओतहि याव तनि अक्षरक सहायकक  
प्रयोग उचित । सम्पति- उचारण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उचारण आसानीस समुह ले) । झुदा  
सरोतिय (सरोतिय ले) ।

बाष्ट्रिय (बाष्ट्रीय ले)

सकै/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

गोडिअ/ गोडि जेन/ गोड्य जेन

गोडिअ/ गोड्य/ (अर्थ परिवर्तन) गोड्य/ गोडि

ओ लोकनि ( लो क२, ओ मे रिकारी ले)

ओ/ ओहि



उहिछ/

उहि छन/ उसी नः

ऊपरों छसख

गच्छप्रया

देखियेक/ (देखिओक ले- तलिन थ ये द्रय थ दीर्घक मानक प्रयोग अवचित)

ऊका / जेका

तंग/ तै

लोएत / लूएत

नहि/ नहि/ नंग/ नग/ ले

लोसे/ लोसे

रउ /

रझी (मेवाउत)

गाए (गांग नहि), दूदा गांगक दू (गांगक दू ले । )

बल्ले/ पहिले

लमरी/ थरी

सर - सभ

सरलक - सभलक

धवि - तक

गग- रात

बृमर - समसर

बृमल्लो/ समसल्लो/ बृमनह - समसनह

लमर आव - लम सभ

आकि- आ कि

सकेछ/ करेछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता ले)

लोअन/ लोनि

जाअन (जानि ले, जेना देत जाअन) दूदा जानि-बृमि (अर्थ पवित्र, तन)

पगठ/ जागठ

आउ/ जाउ/ आउ/ जाउ



मे, के, स, पव (गिहसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (गिहसँ सँ क२) दूदा दूठा रा लेसी रिभङ्गि सग बहनापव पहिनि रिभङ्गि ठोके सँठु । जेना एमे सँ ।

**एकठा, दूठा (दूदा क२ ठा)**

रिकावीक प्रयोग गिहक अन्तमे, रीचमे अनारथक करै ले । आकावातु आ अन्तमे अ क बाद रिकावीक प्रयोग ले (जेना दिअ)

**, आ/ दिअ , आ, आ ले )**

अणोस्ट्रॉलीक प्रयोग रिकावीक रदनामे कवर अन्तित आ मात्र कौंठक तकनीकी नृनताक परिचायक)- उना रिकावीक संकृत कप २ अरग्रह कहल जागत अछि आ रत्नी आ उचावण दू ठाम एकव लोप बहत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप बहिते अछि) । दूदा अणोस्ट्रॉली सेहो अग्रजोमे पसेसि केसमे लोगत अछि आ फेचमे गिहमे जतए एकव प्रयोग लोगत अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उचावण लेजोन डेठव लोगत अछि, माले अणोस्ट्रॉली अरकाणि ले दैत अछि रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकावीक रदना देनाग तकनीकी करै सेहो अन्तित) ।

अगमे, एहिमे/ एमे

अगमे, जालिमे

एकन/ अवन/ अगवन

**के (के नहि) मे (अन्तर्भाव बहित)**

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ ( स२ स ले)

**गाहू तव**

**गाहू तग**

**साँस क**

जो (जो go, करै जो do)

**ते/तअ जेना-** ते दुखाले/ तगमे/ तगले

**जे/जअ जेना-** जे कावण/ जगसँ/ जगले

**ए/अअ जेना-** ए कावण/ एसँ/ अगले/ दूदा एकव एकठा आस प्रयोग- नातति कतेक दिसँ कहैत बहत अग

**ले/लअ जेना** लेसँ/ नगले/ ले दुखाले

**नहँ/ ले**







.

## आङन आङन

१०. श्रायः श्रायह

११. दुःख दुःख

१२. छति गेल छन गेल/छति गेल

१३. देतबिह देतबिह, देतबिह

१४.

## देखतहि देखतनि/ देखतहि

१५. छतिह/ छतिह छतिह/ छतिह/ छतिह

१६. छतिह/छतिह छतिह/छतिह

१७. एखला

## अखला

१८.

## बठनि बठनि बठनि

१९. ७/७२(सर्लाय) ७

२०

## ७ (सर्लाय) ७/७२

२१. कागि/कागि कागि/कागि

२२.

## छे छे/छे २३ न-न-न

२४. केतहि/केतनि/केतनि

२५. तनत/ तनत

२६. ज्ञा

## बलन/ज्ञाय बलन/ज्ञाय बलन

२७. निकतय/निकतय

## नागत/ नगत बलन/ बलन नागत/ नगत निकत/बलन नागत

२८. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतय/ ७तय

२९.





## की कृबन जे कि कृबन जे

३०. जे जे/जे२

३१. कृदि / यदि(योन पावर) कृगद/यागद/कृद/याद/

यदि (योन)

३२. अले/ ओले

३३.

लैय/ लैय लैय

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. साय-सयुव सास-सयुव

३६. डल/ सात ड/डः/सात

३७

की की/ की२ दीदीकबानुमे २ रजित

३८. जराय जराय

३९. कयतल/ कयतल कयतल

४०. दलान दिशि दलान दिशि/दलान दिस

४१

. गेनार गेनार/गेनार

४२. किड आब/ किड ओब/ किड आब

४३. जाय डन/ जायत डन जाति डन/जैत डन

४४. गहंटा/ जैत जायत डन/ जैत जायत डन गहंटा/ जैत जायत डन

४५.

जयन (यय)/ जयन(यय)

४६. नय/ नय क/ क२/ नय कय / न२ क२/ न२ कय

४७. न/न२ कय/

कय

४८. एयन / एयन / ययन / ययन

४९.

ययन ययन

५०. गयन गयन



३.१.

**धव पाव केनाथ धव पाव केनाथ/केनाथ**

३.२. जेकाँ जेकाँ/

**जकाँ**

३.३. तलिन तेलिन

३.४. एकव श्रकव

३.५. रलिनउ रहलोग

३.६. रलिन रलिन

३.७. रलिन-रलिनोग

**रलिन-रलिनउ**

३.८. नहि/ ले

३.९. कबर / कबराय/ कबरथ

३.१०. तै/ त २ तय/तथ

३.११. डेयावी ये डोष्ट-भाय/डे, जेष्ट-भाय/भाय

३.१२. गिनतीमे दृ भाग/भाय/भाय

३.१३. ग गौथी दृ भाग/भाय/भाय/ जेत । यावत जावत

३.१४. माय ये / माय दृ माय भाग/भाय

३.१५. देहि/ दणन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ देहि

३.१६. द/ द२/ द

३.१७. उ (संयोजक) उ२ (संरनाय)

३.१८. तका कए तकाय तकाथ

३.१९. पैले (on foot) पएल कएल/ कैल

३.२०.

**तहमे/ तहमे**

३.२१.

**गुनीक**

३.२२.

**रजा कय/ कय / क२**

३.२३. रनाय/रनाथ



547X VIDEHA

१४. लोना

१५.

द्वितीया द्वितीया

१६.

तत्त्व

१७. गवर्गुतहि/ गवर्गुतहि

गवर्गुतहि/ गवर्गुतहि

१८. राव राव

१९.

छह छह(अक्षर)

२०. छे छे

२१.

२. ल/ ल ल/ल

२२. एवम् एवम्

२३. भूमिगत भूमिगत

२४. सुख

२५. सुख/ सुख

२६. सख सख २७.

द्वि

२८. कवर्गुतहि/३ कवर्गुतहि स द्वि/कवर्गुतहि-कवर्गुतहि

२९. सुख

सुख

३०. सख १-साख

सख १-साख

३१. सख-सख सख-सख

३२. सख

३३. सख

३४. सख



९८. लेख- ले - लेख

९९. वृत्त वृत्त

१००.

वृत्त (संज्ञान अर्थ)

१०१. यौह यौह / अयह/ सौह/ सयह

१०२. तालि

१०३. अयनाय- अयनाय/ अयनाय/ अयनाय

१०४. निव- निव

१०५.

विन विन

१०६. जय जाय

१०७.

जाय (in different sense)-last word of sentence

१०८. उत नव अयि जाय

१०९.

ल

११०. खेलाय (pl ay) - खेलाय

१११. शिलायत- शिलायत

११२.

ठग- ठग

११३.

पठ- पठ

११४. कथि/ कथिय कथिय

११५. वाक्य- वाक्य

११६. लेख/ लेख लेख

११७. अवदा-

उवदा

११८. वृत्तवहि (different meaning- got understand)



547X VIDEHA

११७. बुझएतहि/बुझैतनि/ बुझयतहि (understood himself)

११७. छनि- छन/ छनि जैन

११९. ~~बधाअ~~ बधाय

११९.

योन गाढतविह/ योन गाढतनि/ योन गाढतविह

११७. कैक- कक- ककक

१२०.

नग नग

१२१. जलनाअ

१२२. जलनाअ जबउनाअ- जलनाअ/

जलनाअ

१२३. जेअत

१२४.

गबलतहि/ गबलतनि गबलतहि/ गबलतनि

१२७.

टिथैत- (to test) टिथैत

१२७. करअये (willing to do) करैयो

१२९. जेकवा- जेकवा

१२९. तकवा- तेकवा

१२७.

बिदेसब श्रानये/ बिदेसब श्रानये

१३०. करयतह/ करयतह/ करयतह करयतह

१३१.

हकि (छना मअवक)

१३२. उजन रजन आनयोच/ आनयोस कगता/ कगता/ कागज

१३३. आये भाग/ आ-भागे

१३४. पिछ / पिछाय/पिछ

१३७. नग/ ल



547X VIDEHA

१३७. बछा नग

(स) पिछ जाय

१३९. तबन स (नग) कहैत थि । कहै/ सुनै/ देखै उन दा कहैत-कहैत/ सुनैत-सुनैत/ देखैत-देखैत

१३९.

कतेक छोटे/ कतेक छोटे

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. तग तग

१४१. खेलैत (for playing)

१४२.

डुबिह/ डुबिह

१४३.

लेखत लेख

१४४. का कियो / लेउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. बन्नाअ/ बन्नाय/ बन्नाय

१४८. जलनाअ

१४९. ककरी कसी

१५०. चबछ चर्च

१५१. कर्म कर्म

१५२. डूराअ/ डूराअ/ डूराअ डूराअ/ डूराअ

१५३. एअनका/

अअनका

१५४. तग/ तग (राकक अतिम गेह)- तग

१५५. कएतक/



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली साप्ताहिक ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

माथिलीह सप्तकृष्ण ISSN 2229-

547X VIDEHA

## कतक

१३.७. गवरी गर्मी

१३.१

## बबरी बदी

१३.४. सुना फेलाह सुना/सुना

१३.६. एनाथ-फेनाथ

१३.०.

## जेना ल खेतहि/ जेना ल खेतनि

१३.९. नहि / ले

१३.२.

## उला उला

१३.३. कतह/ कतौ कली

१३.५. उमबिगब-उमकाब उमबगब

१३.७. भबिगब

१३.७. धोन/धोखन धोएन

१३.१. गग/गग

१३.४.

## के के

१३.६. दवरज्ज/ दवरजा

१३.०. ठाय

१३.९.

## धवि डक

१३.९.

## घुवि छोट

१३.९. बोकखक

१३.९. बड

१३.७. जे/ तू

१३.९. जेहि/ अछमे ग्राम

१३.९. जेही / जेहि





ejournal बिदेह प्रथम मैथिली मासिक ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

११५.

**कवयप्रथ कवयप्रथ**

११६. **एकैठा**

११७. **कविताथि / कवताथि**

११८.

**गहँचि / गहँच**

११९. **वाचनहि बचनहि / बचननि**

१२०.

**नगनहि / नगननि नगनहि**

१२१.

**शुनि (उछवा श्रुण)**

१२२. **खडि (उछवा श्रुण)**

१२३. **एतथि ऐतथि**

१२४. **रितउल / रिजेस /**

**रिजेस**

१२५. **कवरउतहि / कवरुतनि**

**कखनहि / कखननि**

१२६. **कखनहि / कखननि**

१२७.

**आकि / कि**

१२८. **गहँचि /**

**गहँच**

१२९. **रती जवाय / जवाय जवा (आणि नगा)**

१३०.

**ल ल**

१३१.

**ल ल ल (ल ल ल रिभक्ति ल ल ल)**

१३२. **ल ल ल**

१३३. **कखन(spacious) ल ल ल**



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मस ६४ अंक १२७)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

१७१. होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/होतनि/ होतहि

१७४. लथ मटियाएर/ लथ मटियारय/लथ मटियाएर

१७७. लका लका

१८०. देवाय देवा

१८५. देवारय

१८९. सउनि सउर

१९३.

**माले माले**

१९४. गेलैरु/ गेलहि/ गेलनि

१९७. लेराक/ लेराक

१९७. केला/ कएतहु/केला/ केन

१९९. किड न किड/

**किड ल किड**

२०४. घुमेतहु/ घुमउतहु/ घुमेला

२०७. एनाक/ एनाक

२१०. अः/ अर

२११. तय/

**तय (अर्थ-गविरुज) २१२. कनीक/ कलक**

२१३. सरलक/ सभक

२१४. मिलाः/ मिला

२१७. कः/ क

२१७. जाः/

**जा**

२१९. आः/ आ

२१४. भः/ भ (कॉलक कयक हातक)

२१७. निथय/ नियम

२२०

**लेकटायर/ लेकटायर**



२२९. गहिन अक्षर ठ/ बंदक/ ब्रीक ठ

२२९. तहि/तहि/ तहि/ तै

२२९. कहि/ कही

२२९. तै/

तै / तै

२२९. नै/ नै/ नै/ नै/ नै

२२९. तै/ तै / तै/ तै

२२९. तै/ तै/ तै/ तै

२२९. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. अ (come) / अ (conjunction)

२२९.

अ (conjunction) / अ (come)

२२९. कल/ कल/ कल/ कल

२२९. गेलै- गेलै- गेलै

२२९. लेखक- लेखक

२२९. केलो- केलो- केलो/ केलो

२२९. किछ न किछ- किछ स किछ

२२९. केलै- केलै

२२९. अ (come) - अ (conjunction-and) / अ । आर-आर / आर-आर

२२९. तै-तै

२२९. घुमै- घुमै- घुमै

२२९. एतक- एतक

२२९. लेखि- लेखि/ लेखि

२२९. उ-नाम उ थायक ब्रीक(conjunction), उ कहक (he said) / उ

२२९. की तै/ केली अतै तै/ की तै। की तै

२२९. दृष्टि/ दृष्टि

२२९.

. गीत/ गीत



547X VIDEHA

२४७.तेँ / तँए/ तहिं/ तहिं

२४९.जेँ

/ जाँ/ जँ

२४९.सभ/ सर

२४९.सभक/ सरक

२४९.कहि/ कही

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कनकती भऽ के/ भए के/ भय के

२४९.कन/ केन/ कन/ कन

२४९.अः/ अह

२४९.अः/ अह

२४९.अः/ अह

अः/ अह (अर्थ परिवर्तन)

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९.कन/ कन/ कन/ कन

२४९



## बिदेह/ बिदेह/ बिदेह

१२. पिअराक/ पिअरक/पियरक

१३. मुक/ मुक

१४. मुकले/ मुक

१५. अउतार/अउतार/ एउतार/ एउतार

१६. जारि/ जारि/ जारि/ जारि

१७. जारि/ जारि/ जारि

१८. अउत/ अउत

१९. कैक/ कैक

२०. अउत/ अउत/ अउत

२१. जारि/ जारि/ जारि (नानति जारि नगनीह । )

२२. नुकन/ नुकन

२३. कर्अन/ कर्अन

२४. तारि/ तारि/ तारि

२५. गायर/ गायर/ गायर

२६. सके/ सक/ सक

२७. सके/सके/ सक (भारत सके गेन)

२८. कहेत बरी/देवेत बरी/ कहेत डरौ/ कहे डरौ- अलिनी छेते/ गहेत

(गहेत-गहेत अरि कबल कन गविरति) - आव बुने/ बुनेत बुने/ बुने छी अरि बुनेत-बुनेत/ सकेते/ सके। कहेते/ कहे। दे/ देते। डेर/ डेर। रचेते/ रचेते। बर/ बर। बिनु/ बिनु। बालि/ बालि बुने अ बुनेत केव अपन-अपन जगलप प्रयोग समीप अछि। बुनेत-बुनेत अरि बुनेति। अरि बुने छी।

२९. दुआर/ दुआर

३०. डेर/ डेर/ डेर

३१.

बन/ बीन/ बुन (बेव बन/ बेव बीन)

३२. तक/ धरि

३३. गे/ गे (meaning different - जनले गे)

३४. स/ स (अरि द, त)



१६३. ३. ३. तीन अक्षरक मेन रदना पुनरुक्ति एक आ एकठा दोसवक उपयोग आदिक रदना व आदि । मह ३. ३. ३. / मह ३. ३. ३. कर्ता कर्ता आदिमे उ सहाजक कोना आरथकता मैथिलीमे ले अछि । **रज्ज**

१६३. **रज्ज** / **रज्ज**

१६१. **राना/राना राना/ राना (बहुराना)**

१६४

**रानी/ (बहुरानी)**

१६६. **रात/ रात**

२००. **अनुबन्धित/ अनुबन्धित**

२०१. **रज्ज/ रज्ज**

२०२. **नमस्कार/ नमस्कार**

२०३. **नारी/ नारी (**

**भेटैत/ भेटैत)**

२०४. **नगर/ नगर**

२०५. **रानी/ रानी**

२०६. **वाचक/ वाचक**

२०७. **आ (come)/ आ (and)**

२०८. **पञ्चाताप/ पञ्चाताप**

२०९. २ केव बारबार गेहक अनुमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

२०९. **कहेत/ कहे**

२१०.

**बल (हल)/ क (हल) (meaning different )**

२११. **तापति/ तापति**

२१२. **खराप/ खराप**

२१३. **लागन/ लानि/ लागनि**

२१४. **जाति/ जाति**

२१५. **कागज/ कागज/ कागज**

२१६. **गिबे (meaning different - swallow)/ गिबे (खस)**

२१७. **वाह्मि/ वाह्मि**



## DATE-LIST (year – 2012–13)

(१४० कसती जात (

### **Marriage Days:**

Nov.2012– 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012– 5,9, 10, 13, 14

January 2013– 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013– 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013– 21, 22, 24, 26, 29

May 2013– 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013– 2,3

July 2013– 11, 14, 15

### **Upanayana Days:**

January 2013– 16

February 2013– 14, 15, 20, 21

April 2013– 22

May 2013– 20, 21

### **Dviragamn Din:**

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

### **Mandan Din:**





November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

July 2013- 10, 15

### **FESTIVALS OF M THILA (2012-13)**

Mauna Panchami -08 July

Madhushravani - 22 July

Nag Panchami - 24 July

Raksha Bandhan- 02 Aug

Krishnastami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August

Vishwakarma Pooja- 17 September

Hartalika Teej - 18 September

ChauthChandra-19 September

Karma Dharma Ekadashi -26 September

Indra Pooja Aarambh- 27 September

Anant Caturdashi - 29 Sep

Agastyarghadaan- 30 Sep

Pitri Paksha begins- 30 Sep



Ji mnot avahan Vr at a/ Ji ti a-08 October

Mat ri Navami - 09 October

Somvati Amavasya Vr at - 15 October

Kal ashst hapan- 16 October

Bel naut i - 20 October

Pat ri ka Pr avesh- 21 October

Mahast ami - 22 October

Maha Navami - 23 October

Vj aya Dashami - 24 October

Koj agar a- 29 Oct

Dhanter as- 11 November

Di yabati , shyama pooja-13 November

Annakoot a/ Govardhana Pooja-14 November

Bhr atridwiti ya/ Chitragupt a Pooja- 15 November

Chhat hi -19 November

Devot than Ekadashi - 24 November

ravi vratar ambh- 25 November

Navanna parvan- 25 November

KartikPoorni ma- Sama Visarjan- 28 November

Mvaha Panchmi - 17 December

Makar a/ Teela Sankranti -14 Jan

Narakni varan chaturdashi - 08 February

Basant Panchami / Saraswati Pooja- 15 February

Achl a Sapt mi - 17 February



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली मासिक ई पत्रिका बिदेह १२७ म अंक ०१ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मास ६४ अंक १२७)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Mahashi var atri -10 Mar ch

Holi kadahan -Fagua-26 Mar ch

Holi - 28 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -07 Apr il

Chaiti navar atr ar ambh- 11 Apr il

Jur ishital -15 Apr il

Chaiti Chhathi vr ata-16 Apr il

Ram Navami - 19 Apr il

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savit ri -barasai t - 08 June

Ganga Dashhara-18 June

Somavati Amavasya Vr ata- 08 July

Jagannath Rath Yatra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poorni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सबठा पुरान अरु ब्रैल-बिदेह अ, तिरहुता आ देवनागरी कयमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अरु अरु ३० पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अरु अरु आगाँक अरु ३० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download



<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो सकल मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

३. मैथिली वीडियो सकल Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**बिदेहक एहि सब संस्थागरी निरूपन अखे एक छत्र छउ ।**

३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेशन :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अखेजीमे अनूदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्व-रूप "आनसबिक गाछ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडियन :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह कागज :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिला-सुब) जानबूत (बनौंगा)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल ब्रेन बिदेह ब्लाग

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>



१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका मैथिली गैथीक आर्काइव

<http://videha-pot hi .blogspot .com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot .com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot .com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot .com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmithila.blogspot .com/>

१०. बिदेह प्रकाशन.

<http://www.shrut i -publication.com/>

११. <http://groups.google.com/group/videha>

१२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

१३. गजेन्द्र ठाकुर गजेन्द्र

<http://gajendrathakur123.blogspot .com>

१४. मेना भुठका

<http://mangan-khabas.blogspot .com/>

१३. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल गौडकास्ट साठ- मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

१३.  Videha Radio

१९.  Join official Videha facebook group.

२५. बिदेह मैथिली नाष्ट डेस



<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अचिरुव अखर

<http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai-ku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विरुनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

**महत्वपूर्ण सूचना:** The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>

मानुषिह संस्कृतम्, ISSN 2229-

The image displays a collection of 12 book covers from the 'Vidheh Maithili Sahitya Akademi' series. The covers are organized into two rows of six. The top row features books with yellow and brown backgrounds, while the bottom row features books with brown and gold backgrounds. Each cover includes the title in Maithili, a central illustration, and a small inset box with text. The titles include 'विदेह विदेह', 'विदेह मैथिली लघु कथा', 'विदेह मैथिली पद्य', and 'विदेह मैथिली लिहनि कथा'.

ଅଧ୍ୟାୟକ: ଗଞ୍ଜେଇ ଠାକୁର ।

রিদেহ





मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१३. सरपिकाव लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पार्षिकक ई पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: शिव कुमार सा आ झुवाजी (मेलोड्र क्यार कर्ण) । भाषा-संपादन: नरेंद्र कुमार सा आ पद्मिका विद्यानन्द सा । कला-संपादन: ज्योति सा टेलीवी आ बगि बग सा । संपादक-मोड-अल्लुवा डा जय रमा आ डा. बाजीर क्यार रमा । संपादक-नौक-वगमच-चनचित-लेखन ठाकुर । संपादक-सूचना-संपर्क-समाद-पुनः मंडल आ शिखा सा । संपादक-अनुवाद विभाग- विनीत उपल ।

बचनाकाव अपन मौलिक आ अंधकाशित बचना (जेकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मर्या डहि) ggajendra@videha.com के मेल अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन सम्पत्ति पविचय आ अपन स्वन कएन गेल फोर्टे पठेताह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु बिदेह (पार्षिक) आ पत्रिकाकेँ देन जा बहन अछि । मेल प्राप्त होयराक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकव प्रकाशनक अंकक सूचना देन जायत । बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिकक आ पत्रिका अछि आ एमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ सरपित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि आ पत्रिकाकेँ सीमिति नस्का ठाकुर द्वारा मासक ०९ आ १३ तिथिकेँ आ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सरपिकाव स्ववर्षित । बिदेहमें प्रकाशित सभ्ठा बचना आ आर्काइवरक सरपिकाव बचनाकाव आ संग्रहकतुकि नगमें छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क कर । एहि सागठकेँ प्रीति सा ठाकुर, मधुनिका टेलीवी आ बगि प्रिया द्वारा डिजाइन कएन गेल ।



सिद्धिबद्ध